रजिस्ट्री सं. डीएल—33001/2003 REGISTERED No. DL—33001/2003

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 2] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 11, 2003 (पौष 21, 1924)
No. 2] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 11, 2003 (PAUSA 21, 1924)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं 5

भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 31

भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 1

भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 23

भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम *

भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ *

भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं *

भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) *

भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश *

भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं -

भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस 69

भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं *

भाग III—खण्ड-4—विधिक अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं 1317

भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस 5

भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक *

*आंकड़े प्राप्त नहीं हैं।

CONTENTS

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 5

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 31

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . 1

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence 23

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . . . . *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India 31

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs 69

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . *

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 1317

PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies 5

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi . . . . . *

*Folios not received.

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]
[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]
[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2002

सं. 213-प्रेज/2002--राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिक को अत्यन्त उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्यों के लिए 'अशोक चक्र' प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :--

जे सी-498232 सूबेदार सुरिन्दर सिंह
3 सिक्ख (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 मार्च 2002)

राजौरी सैक्टर (जम्मू-कश्मीर) में नियंत्रण रेखा पर तैनात प्लाटून की कमान संभालते हुए सूबेदार सुरिन्दर सिंह ने आपरेशनों के दौरान निरन्तर वीरता तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

आतंकवादियों के मौजूद होने की सूचना के आधार पर घात टुकड़ियां बिठाई गई थीं। 03 मार्च 2002, को 2350 बजे जब इस क्षेत्र में आतंकवादियों की एक टोली देखी गई, तो सूबेदार सुरिन्दर सिंह ने यह सुनिश्चित किया कि घात टुकड़ी समय से पहले गोली न चलाए तथा आतंकवादियों के और नजदीक आने का इंतजार करती रहे। त्वरित तथा निर्णायक भिड़ंत में उन्होंने तुरत बुद्धि तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए एकदम नजदीक से पहले आतंकवादी को गोली मार दी। इसी बीच, शेष आतंकवादी जंगल में फैल गए। सूबेदार सुरिन्दर सिंह ने तुरन्त ही आतंकवादियों को तलाशने की व्यवस्था की। तलाशी के दौरान, वे एक शिलाखंड के पीछे से कारगर गोलीबारी की चपेट में आ गए। इसके बाद भारी गोलीबारी शुरू हो गई। व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए जैसे ही वे भारी गोलीबारी के बीच से रेंगकर आगे बढ़े तो एक आतंकवादी उन पर टूट पड़ा। गुत्थम-गुत्था लड़ाई में सूबेदार सुरिन्दर सिंह ने उसे गोली से उड़ा दिया।

इसी बीच, तराला गाँव के एक घर में चार आतंकवादी घुस आए थे तथा भारी गोलीबारी कर रहे थे। हमारी ओर से की जा रही गोलीबारी कारगर सिद्ध नहीं हो पा रही थी। स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए सूबेदार सुरिन्दर सिंह उस घर में घुसने की जगह बनाने के लिए स्वेच्छा से आगे आए। भारी गोलीबारी के बावजूद अपनी जान को भारी जोखिम में डालकर वे छत पर चढ़ गए, वहां विस्फोटक लगाए तथा विस्फोट करके मकान में छेद कर दिया। इसके बाद सूबेदार सिंह ने मकान के अन्दर एक ग्रेनेड फैंकते हुए गोलीबारी की। जब वे वहां से हट रहे थे तो आतंकवादियों ने उनकी टुकड़ी पर एक ग्रेनेड फैंका। अपने साथियों पर खतरे को भाँपते हुए वे पूरा विस्फोट खुद ही झेल गए; परिणामस्वरूप उनके पूरे शरीर पर गोले के टुकड़ों से अनेक घाव हो गए। गम्भीर घावों के बावजूद सूबेदार सुरिन्दर सिंह आतंकवादियों से लगातार जूझते रहे तथा दो अन्य आतंकवादियों को मार डाला। तथापि, सुरक्षित स्थान पर ले जाते वक्त वे घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार, सूबेदार सुरिन्दर सिंह ने अत्यन्त शानदार बहादुरी, अदम्य साहस तथा साथियों के प्रति चिन्ता का प्रदर्शन करते हुए भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप सर्वोच्च बलिदान दिया।

बरुण मित्रा
निदेशक

संख्या 214–प्रेज/2002 — राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्यों के लिए **'कीर्ति चक्र'** प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :-

1. **जेसी-412535 नायब सूबेदार ईश्वर सिंह**
5 पैरा

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 11 नवंबर 2001)

नायब सूबेदार ईश्वर सिंह सड़क खोलने वाले दल का कमांडर थे। 11 नवंबर,2001 को सड़क खोलते वक्त उनको पुंछ, जम्मू-कश्मीर में 1450 मीटर की ऊंचाई पर घने जंगलों में, मंगनार जंगल के पास विदेशी आतंकवादियों के एक दल की गतिविधियों की सूचना मिली, जहां दो या तीन मीटर की दूरी तक ही दिखाई दे रहा था।

नायब सूबेदार ईश्वर सिंह ने कंपनी कमांडर को सूचित किया, पिकेटों को फिर से व्यवस्थित किया तथा तेजी से एक टुकड़ी के साथ जंगल की ओर बढ़े तथा आतंकवादियों के दल के पीछे लगे रहे। इनकी टुकड़ी पर अचानक स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी होने लगी। नायब सूबेदार ईश्वर सिंह ने शांत तथा संतुलित रहते हुए अपने आदमियों को तैनात किया तथा तुरंत गोलीबारी का जवाब दिया और दो आतंकवादियों को मार गिराया। कम दूरी तक दिखाई देने तथा घने झाड़-झंखाड़ की परवाह न करते हुए उन्होंने एक तरफ से जाकर दुश्मन को रोककर बच निकलने का रास्ता बंद कर दिया। कंपनी कमांडर को गंभीर रूप से घायल देखकर उन्होंने स्थिति को नियंत्रण में लेते हुए अपने आदमियों को गोलीबारी की आड़ देने के लिए कहा। स्वयं उन्होंने रॉकेट लांचर के फायर का निर्देशन किया, जिसके फलस्वरूप तीन आतंकवादी मारे गए।

स्वयं की सुरक्षा की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए नायब सूबेदार ईश्वर सिंह दुश्मन पर टूट पड़े तथा स्वयं दो आतंकवादियों को मार डाला। अपने साथी के साथ उन्होंने बचे हुए आतंकवादी का पीछा किया तथा गुत्थम-गुत्था लड़ाई में उसका अकेले ही सफाया कर दिया।

नायब सूबेदार ईश्वर सिंह ने आतंकवादियों का सामना करते हुए अत्यंत अनुकरणीय वीरता, आक्रामक भावना तथा सैनिकोचित सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया ।

2. **जेसी 612305 नायब सूबेदार देव बहादुर थापा**
1/4 गोरखा राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 19 नवंबर 2001)

नायब सूबेदार देव बहादुर थापा 19 नवंबर,2001 को जम्मू-कश्मीर में मेगनवार- सद्गंगा जंगल में छिपे संभावित आतंकवादियों का सफाया करने के लिए शुरू किए गए तलाशी और सफाया आपरेशन के दौरान तलाशी पार्टी के कमांडर थे।

ज्योंही तलाशी पार्टी का सामना ऊंचे झाड़ीदार टीले पर स्थित एक ठिकाने में अच्छी तरह से छिपे हुए तथा हथियारों से पूरी तरह से लैस आतंकवादियों के एक दल से हुआ भंयकर गोलीबारी शुरू हो गई और हमारे सैनिक खतरनाक ढंग से फंस गए । उन्होंने तुरंत ही अपने सहायक दल को तैनात किया तथा आतंकवादियों के बच निकलने के रास्ते बंद कर सघन गोलीबारी के बीच उनके नजदीक पहुंच गए। इसी बीच उनके जबड़े में घाव लग गया। घाव की परवाह किए बिना उन्होंने गोलीबारी जारी रखी तथा दो आतंकवादियों को मार डाला । इसके बाद वे एक अन्य आतंकवादी के नजदीक पहुंचे तथा हथगोला फेंककर उस आतंकवादी को मार डाला, किंतु उन्हें गोली का एक और घातक घाव लग गया। इस वीरतापूर्ण कार्रवाई से प्रोत्साहित होकर उनके सैनिकों ने दो अन्य आतंकवादियों का सफाया कर दिया तथा बड़ी मात्रा में युद्ध-सामग्री बरामद की।

नायब सूबेदार देव बहादुर थापा ने दायित्व से बढ़कर असाधारण नेतृत्व तथा शानदार वीरता का प्रदर्शन दिया तथा अपने आदमियों को हताहत होने से बचाने में सर्वोच्च बलिदान दिया।

3. **आई सी- 47093 मेजर उशनिशा जेटली**
3/11 गोरखा राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 01 दिसंबर 2001)

मेजर उशनिशा जेटली ने 01 दिसंबर, 2001 को लगभग 0900 बजे गांव केरी, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में तलाशी तथा सफाया आपरेशन के दौरान दो आतंकवादियों को देखा जिन्होंने कारगर तथा भारी गोलीबारी से उनके अन्य कॉलम को घेर लिया था।

खुले स्थान तथा प्रतिकूल स्थिति में हमारी सैन्य-टुकड़ियों के लिए जोखिम को भांपते हुए मेजर उशनिशा जेटली ने यह अच्छी तरह जानते हुए भी कि ऐसा करने पर वे आतंकवादियों की गोलीबारी की जद में आ जाएंगे, दूसरी दिशा से आतंकवादियों को घेरने का निर्णय लिया। आतंकवादियों को उलझाए रखने के लिए अपने आदमियों को प्रोत्साहित करते हुए वे अकेले ही आतंकवादियों की ओर रेंगने लगे। बिल्कुल नजदीक पहुंचकर वे खुले में आ गए और आतंकवादियों पर टूट पड़े तथा एक को मौके पर ही मार डाला । तथापि, इसी दौरान उनके चेहरे तथा छाती पर भी गोलियों की बौछार आ लगी। दूसरा आतंकवादी नीचे पहाड़ी की ओर भागा। गंभीर घावों तथा अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद सुरक्षित स्थान पर ले जाने से मना करते हुए मेजर उशनिशा जेटली दुश्मन के और नजदीक पहुंचे तथा गुत्थम गुत्था लड़ाई में अपने प्राण न्यौछावर करने से पहले दूसरे आतंकवादी को मार डाला।

मेजर उशनिशा जेटली ने अपने वीरतापूर्ण तथा साहसिक कार्य से न केवल दो आतंकवादी मार डाले परंतु अपने सैनिकों की भी जानें बचाई।

मेजर उशनिशा जेटली ने आतंकवादियों के समक्ष शानदार वीरता तथा श्रेष्ठ नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया ।

(बरूण मित्रा)
निदेशक

संख्या 215–प्रेज/2002 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को वीरतापूर्ण कार्यों के लिए 'शौर्य चक्र ' प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं :-

1. **श्री रविंद्र कुमार श्रीवास ,मध्य प्रदेश**
(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 जून, 2000)

दिनांक 23.6.2000 को 8.55 बजे 7/8 लोगों के एक समूह ने महाराणा प्रताप नगर स्थित ग्रीन आटोमोबाइल सर्विस पैट्रोल पम्प पर पत्थरों तथा कुल्हाड़ियों से आक्रमण कर दिया । इन बदमाशों ने पैट्रोल पम्प पर पत्थर फेंके तथा नगदी को लूटने का प्रयास किया। शंकर नगर बारखेड़ी, गोविंदपुरा, भोपाल निवासी 32 वर्षीय श्री रविंद्र कुमार, जो कि पैट्रोल खरीदने आए थे, ने अद्वितीय साहस का परिचय देते हुए बदमाशों को पैट्रोल पम्प के केबिन में जाने से रोकने का प्रसास किया। एक बदमाश ने श्री रविंद कुमार श्रीवास के सिर पर कुल्हाड़ी से चोट मारी जिससे वे गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद श्री श्रीवास ने बदमाशों के पैट्रोल पम्प लूटने के प्रयास का विरोध जारी रखा जिससे आखिरकार उन्हें भागना पड़ा। तथापि, श्री श्रीवास की सिर के घातक घावों की वजह से मृत्यु हो गई।

श्री रविंद्र कुमार श्रीवास ने साहस तथा बहादुरी का प्रदर्शन करते हुए खाली हाथों ही बदमाशों के दांत खट्टे किए तथा इसी प्रक्रिया में उन्हें अपना जीवन गंवाना पड़ा, इस प्रकार उन्होंने दूसरों के लिए मिसाल पेश की।

2. **श्री बचित्तर सिंह, जम्मू-कश्मीर**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 09 सितंबर, 2000)

09 सितंबर, 2000 को लगभग 0600 बजे एक हथियारबंद विदेशी भाड़े का लड़ाकू भूतपूर्व सिपाही बचित्तर सिंह के घर में घुस आया और बंदूक की नोक पर खाने और रहने की जगह की मांग करने लगा। घर की एक महिला से अपने घर में उग्रवादी की मौजूदगी के बारे में जानकर श्री सिंह चुपके से अपनी 303 राइफल लेकर घर से बाहर निकल गए। इस बात को भांपते हुए कि वह उग्रवादी तुरंत भागने की कोशिश करेगा। उन्होंने नजदीक ही स्थित सैन्य शिविर में स्थित गश्ती दल को सूचित करने के लिए एक व्यक्ति को भेजा तथा खुद भाग निकले के संभावित रास्ते पर घात लगाकर बैठ गए।

इससे पहले कि सेना से सहायता पहुंच पाती इस उग्रवादी ने वहां से निकलने की कोशिश की। इस बात को भांपते हुए कि उग्रवादी निकल भागेगा श्री सिंह ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए, सामरिक आड़ लेते हुए भागते उग्रवादी पर गोलीबारी की और उसे जांघ पर घाव करके गंभीर रूप से घायल कर दिया। उग्रवादी द्वारा जवाबी गोलीबारी से विचलित हुए बिना श्री बचित्तर सिंह उस उग्रवादी के करीब रेंगते हुए पहुंचे और जब तक सेना की सहायता नहीं पहुंची तब तक उस घायल उग्रवादी पर कारगर ढंग से कब्जा बनाए रखा।

श्री बचित्तर सिंह ने अनुकरणीय वीरता तथा अदम्य युद्ध-भावना का परिचय दिया जिसके परिणामस्वरूप एक सशस्त्र आतंकवादी मारा गया और शस्त्र, गोलीबारूद तथा विस्फोटक बरामद हुए।

3. **जीएस -165012 एक्स आपरेटर एक्सकेवेटिंग मशीनरी अश्विनी कुमार**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 मई , 2001)

आपरेटर एक्स्केवेटिंग मशीनरी अश्विनी कुमार, 116 आरसी सी (ग्रेफ) हयुलिंग- मेटनगलियांग -चांगलोहागाम (चीन अध्ययन दल) सड़क, जो कि अत्यधिक उच्च प्राथमिकता वाली सड़क है, बनाने के लिए सड़क की फार्मेशन कटाई के लिए डिटेचमेंट मेटन गलीयांग पर डोजर ऑपरेटर के रूप में तैनात थे। मई 2001 माह के दौरन 19,100 कि.मी. पर सड़क की सिधाई में एक नाला पड़ा जिससे कार्य रूक गया। तुरंत ही कोई अस्थायी पुल बनाना संभव नहीं था क्योंकि यह टुकड़ा अभी तक सड़क से नहीं जुड़ा था।

पर्यवेक्षण स्टाफ के साथ चर्चा करने के बाद लगभग 150 मीटर गहरी तथा सीधी खड़ी चट्टान वाली घाटी में से डोजर तथा एयर कम्प्रेशर को निकालने के लिए सर्वेक्षण किया गया। इस तरह की घाटी से डोजर को ले जाने की हिम्मत हर कोई आपरेटर नहीं कर सकता था, परंतु ऑपरेटर एक्स्केवेटिंग मशीनरी अश्विनी कुमार ने स्वेच्छा से इस साहसिक चुनौती को स्वीकार किया और इस पर 18 मई 2001 से कार्य शुरू कर दिया। यह एक दुसाध्य काम था जो प्रत्येक कदम पर खतरों से परिपूर्ण था जिसमें बहादुरी तथा अत्यधिक उच्च स्तर की कार्यकुशलता की जरूरत थी।

अंततः अश्विनी कुमार अपने डोजर को 150 मीटर गहरी घाटी में नाले की सतह पर ले गए जहां घाटी की दोनों दीवारें सीधी खड़ी थीं। जब वे ऊपर चढ़ रहे थे तो नाले की दूसरी ओर उन्हें ऐसी पहाड़ी को सामना करना पड़ा जिसमें डोजर के चलने के लिए जगह ही नहीं थी। इसके अलावा, लगातार मिट्टी भी गिर रही थी, जिससे डोजर तथा आपरेटर के चोट में आने का खतरा था। इस प्रकार की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में अश्विनी कुमार ने अपने हौसले बुलंद रखे तथा इस भागीरथ प्रयास में लगे रहे।

अखिरकार अपने रास्ते की सभी कठिनाइयों पर काबू पाने में वे कामयाब हो गए तथा दो सप्ताह के अल्प समय में ही ऐसे कार्य को पूरा कर लिया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी, और इस प्रकार फार्मेशन कटान का कार्य चलता रहा।

ऑपरेटर एस्केवेटिंग मशीनरी अश्विनी कुमार ने अत्यधिक विषम परिस्थितियों में अत्यधिक उच्च दर्जे के साहस, तुरतबुद्धि तथा अडिग निश्चय का प्रदर्शन किया।

4. **2995915 सिपाही धर्मेन्द्र सिंह तोमर**
राजपूत/10 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 जुलाई, 2001)

10 जुलाई 2001 को 2000 बजे एक गुप्त टुकड़ी ने डोडा जिला के गोतुल क्षेत्र में एक आपरेशन शुरू किया। 11 जुलाई, 2001 को लगभग 1830 बजे टुकड़ी ने गोतुल जंगल में आतंकवादियों के समूह को देखा। सिपाही धर्मेन्द्र सिंह तोमर ने कारगर गोलीबारी से आतंकवादियों को घेर लिया, जबकि टुकड़ी ने उनके चारों ओर घेरा डाल दिया। भारी-गोलीबारी का आदान-प्रदान होने लगा, जिसकी आड़ में आतंकवादी एक नाले में से भागने की कोशिश करने लगे।

इसको भांपते हुए सिपाही धर्मेन्द्र सिंह तोमर अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए एक अन्य सैनिक के साथ नाले की ओर भागे और आतंकवादियों पर कारगर गोलीबारी करने लगे। घिरे पाकर आतंकवादियों ने उनपर दो गोले फैके ताकि बचने का कोई रास्ता बन सके। सिपाही धर्मेन्द्र सिंह अडिग रहते हुए आतंकवादियों पर टूट पड़े तथा बिल्कुल नजदीक से दो को मौके पर ही मौत के घाट उतार दिया।

सिपाही धर्मेन्द्र सिंह तोमर ने दुर्दांत आतंकवादियों के साथ लड़ाई में सच्चे सैनिक की भावना से अनुकरणीय साहस, दृढ़निश्चय तथा पहल का प्रदर्शन किया।

5. **आई सी -58400 कैप्टन तेजकर्म सिंह शेखों**
15 राजपूत

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 04 अगस्त, 2001)

कैप्टन तेजकर्म सिंह शेखों ने 04 अगस्त, 2001 को अपनी कंपनी की एक टुकड़ी के साथ प्रतिकूल और घने जंगलों में तथा नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोलैंड के प्रभाव के अधीन क्षेत्र स्लूइस गेट (बोगा जुली), नालबाड़ी, असम में घात लगाई ।

प्रतिकूल मौसम, भारी बरसात तथा कम दूरी तक दिखाई देने के बावजूद पूर्णतया हथियारों से लैस आतंकवादियों के समूह के साथ साहसिक भिड़ंत में उन्होंने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना आपरेशन का आगे रहकर नेतृत्व किया । आतंकवादियों की ओर से गोलियों तथा हथगोलों की भारी बौछार के बावजूद कैप्टन तेजकर्म सिंह शेखों गजब की तेजी तथा अदम्य साहस के साथ आतंकवादियों की ओर आगे बढ़े तथा एक दुर्दांत आतंकवादी को मार गिराया तथा उससे एक ए.के.-56 राइफल बरामद की । इस अफसर के सुयोग्य नेतृत्व में इस सफल आपरेशन के फलस्वरूप एक अन्य कट्टर आतंकवादी मारा गया । आतंकवादियों के विरुद्ध अनवरत आक्रामक आपरेशन की कड़ी में, जोकि निराश होकर बदला लेने की कार्रवाई कर रहे थे, कैप्टन शेखों ने 12 अगस्त, 2001 को एक अन्य भयंकर भिड़ंत का नेतृत्व किया था। उन्होंने अदम्य साहस तथा उच्च दर्जे की असाधारण बहादुरी से आतंकवादियों का घनी झाड़ियों में पीछा किया । भागते आतंकवादियों ने उन पर अंधाधुंध गोलीबारी की तथा हथगोले फेंके । इन मुश्किलों से न घबराकर अपनी सुरक्षा की चिंता न करते हुए वे आतंकवादी के और नजदीक पहुंचे तथा आमने-सामने की भयंकर लड़ाई में उसे गोली से उड़ा दिया ।

इस अफसर के नेतृत्व में इनकी शानदार साहसिक कार्रवाइयों के फलस्वरूप कुल पांच कट्टर

एनडीएफबी आतंकवादी मारे गए तथा तीन एके-47/56 राइफलें तथा गोलाबारूद, विस्फोटक तथा आपराधिक दस्तावेज बरामद किए गए ।

कैप्टन तेज कर्म सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में अनुकरणीय बहादुरी, अडिग साहस, निडर तथा प्रेरक नेतृत्व का प्रदर्शन किया ।

6. **आई सी 51581 कैप्टन राजेंद्र सिंह धामी**
आर्टिलरी/8 असम राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 07 अगस्त, 2001)

कैप्टन राजेंद्र सिंह धामी ने विशिष्ट सूचना के आधार पर 07 अगस्त, 2001 को मणिपुर के बिशनपुर जिले के अवांग जीरी क्षेत्र में तुरंत घेरा डालने तथा तलाशी आपरेशन की योजना बनाई।

कैप्टन राजेंद्र सिंह धामी ने तुरंत तलाशी की व्यवस्था की तथा बिना व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए अपने कॉलम को आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने पर ले गए। इनकी साहसिक तथा अप्रत्याशित कार्रवाई से दुर्दांत आतंकवादियों के छक्के छूट गए और उन्होंने भागने की कोशिश की परंतु सतर्क स्टॉपों ने उन्हें पकड़ लिया। कैप्टन राजेंद्र सिंह को तुरंत क्षेत्र की तलाशी तथा पूछताछ के फलस्वरूप हथियार, गोलाबारूद तथा रेडियो सेट तथा लाइथोचिंग क्षेत्र में दो दुर्दांत आतंकवादियों के होने की महत्वपूर्ण सूचना मिली। यह जानते हुए भी कि दो आतंकवादी पहाड़ी की चोटी पर हैं, व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने कॉलम का नेतृत्व किया। उन्होंने लक्ष्य क्षेत्र को रणनीतिक ढंग से घेर लिया तथा अपनी टुकड़ी के साथ लक्ष्य की ओर आगे बढ़े । ज्योंही कैप्टन राजेंद्र सिंह धामी लक्ष्य के नजदीक आए, जो कि एक टिन की झोंपड़ी थी, आतंकवादियों ने गोलियों की बौछार करके उनके आगे बढ़ने में बाधा उत्पन्न कर दी। इस अवस्था में उन्होंने गोलियों के कवर की मांग की तथा अपने साथी के साथ झोंपड़ी के नजदीक पहुंचे। ज्योंही वे और आगे बढ़ने लगे उनपर नजदीक से गोलीबारी की गई। वे कूदकर एक पत्थर के पीछे चले गए तथा गोलियों की बौछार के बीच अपने साथी के साथ झोंपड़ी के पिछवाड़े की ओर दौड़े तथा बिल्कुल नजदीक से दो आतंकवादियों को गोली से उड़ा दिया। यहां बड़ी मात्रा में गोलाबारूद तथा आपराधिक दस्तावेज बरामद किए गए।

कैप्टन राजेंद्र सिंह धामी ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए अदम्य साहस तथा आक्रामक भावना का प्रदर्शन किया।

7. **3986227 नायक तीर्थ लाल**
6 डोगरा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31अगस्त, 2001)

31 अगस्त, 2001 को लगभग 1030 बजे नौशेरा, रजौरी, जम्मू-कश्मीर में एक तलाशी पार्टी पर आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी की।

अग्रणी स्काउट नायक तीर्थ लाल की बाईं जांघ में गोली लगी। एक आतंकवादी द्वारा मुहैया करायी गई कवर गोलीबारी की आड़ में आतंकवादियों ने पीछे हटना शुरू कर दिया। अत्यधिक रक्तस्राव होने के बावजूद वे आतंकवादी पर टूट पड़े तथा उसे गोली से उड़ा दिया। उन्होंने अन्य दो आतंक्वादियों को दो सिविलियनों को मानव आड़ बनाकर भागते देखा । वे अपने बहते घावों की परवाह किए बिना आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे। इस साहसिक सैनिक ने उत्कृष्ट निशाने बाजी का प्रदर्शन करते हुए एक आतंकवादी के सिर में गोली मार दी । यह देख दूसरे आतंकवादी ने बंधक को एक तरफ धकेल दिया और नायक तीर्थ लाल पर भारी गोलीबारी करने लगा। उन्हें गर्दन तथा कमर में गोलियां लगीं। वे गिर पड़े परंतु अंतिम सांस लेने से पहले उस आतंकवादी पर हथगोला फेंककर उसे मौत के घाट उतार दिया।

नायक तीर्थ लाल ने वीरता, अडिग निश्चिय, अदम्य साहस का प्रदर्शन किया तथा सर्वोत्तम बलिदान दिया।

8. **2481934 नायक मुख्तियार सिंह**
9 पैरा (एस एफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 02 सितंबर, 2001)

नायक मुख्तियार सिंह 02 सितंबर, 2001 को जनरल क्षेत्र सांजीवाली, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में तलाशी तथा सफाया अभियान के दौरान स्क्वाड कमांडर थे।

नायक मुख्तियार सिंह ने लगभग एक सौ मीटर नीचे एक ट्रैक पर चलते चार आतंकवादियों का पता लगाया। अपने स्क्वाड को, आतंकवादियों के बच निकलने के संभावित रास्तों को रोकने के लिए,

तैनात कर वे अपने साथी के साथ आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे। आतंकवादी सैन्य टुकड़ियों पर अंधा-धुंध गोलीबारी करते हुए भागने लगे। स्वयं की सुरक्षा की बिल्कुल परवाह किए बिना नायक मुख्तियार सिंह ने भागते आतंकवादियों का पीछा किया तथा उनमें से दो को मौके पर ही गोली से उड़ा दिया, जबकि एक आतंकवादी गंभीर रूप से घायल हो गया। उन्होंने खून के निशानों से नाले में छिपे घायल आतंकवादी का पीछा किया। उन्होंने हथगोला फेंका तथा आगे बढ़कर तीसरे आतंकवादी का भी सफाया कर दिया।

नायक मुख्तियार सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस, आक्रामक भावना तथा अनुकरणीय नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

9. **9418599 हवलदार गोकुल कुमार प्रधान,**
3/11 गोरखा राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 04 सितंबर, 2001)

हवलदार गोकुल कुमार प्रधान घातक प्लाटून के सब टीम कमांडर थे। गांव सारहोटी, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में 04 सितंबर, 2001 को घेराबंदी तथा तलाशी आपरेशन के दौरान एक टुकड़ी को घने मक्का के खेतों में आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से गोलीबारी करके घेर लिया ।

इस प्रतिकूल स्थिति से छुटकारा पाने, अपनी टीम को बचाने तथा आतंकवादियों का सफाया करने के लिए प्लाटून कमांडर ने हवलदार गोकुल कुमार प्रधान तथा उसके साथी को अलग दिशा से आतंकवादियों पर गोलीबारी करने का कार्य सौंपा । दोनों रणनीतिक दक्षता कवर का इस्तेमाल करते हुए आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे। अपने आप को घिरे हुए पाकर आतंकवादियों ने दोनों पर गोलियों की बौछार कर दी । फौलादी हौसले का प्रदर्शन करते हुए और पहल करके हवलदार प्रधान ने अदम्य साहस की एक कार्रवाई में हिप से आतंकवादियों पर गोलियां बरसा दीं। इस अप्रत्याशित पूर्व कार्रवाई से आतंकवादी हतप्रभ रह गए । एक घंटे से भी अधिक समय तक चलने वाली गुत्थमगुत्था लड़ाई में दोनों सैनिकों ने घने मक्का के खेतों में आतंकवादियों का पीछा किया तथा एक-एक करके चारों को मार डाला और अपने सैनिकों की जानें बचाई ।

हवलदार गोकुल कुमार प्रधान ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में दुर्लभ साहस तथा वीरता का प्रदर्शन किया ।

10. **आई सी-47725 मेजर बलराज सिंह सोही**
5 जम्मू-कश्मीर लाईट इन्फैंट्री

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 05 सितंबर 2001)

05 सितंबर, 2001 को 1000 बजे लांतीबाड़ी, बाड़ापेट्टा, असम में कुछ आतंकवादी छिपे होने की सूचना मिली थी। कंपनी कमांडर मेजर बलराज सिंह सोही ने दक्षतापूर्वक एक साहसिक आपरेशन की योजना बनाई। अपने दल के साथ उन्होंने अत्यधिक कठिन तथा अप्रत्याशित रास्ता अपनाया तथा पूरी तरह गोपनीयता बनाए रखते हुए 1310 बजे चार घरों के एक समूह को घेर लिया।

ज्योंही मेजर बलराज सिंह सोही एक अन्य रैंक के साथ इन घरों में से एक के पास पहुंचे तभी गोलीबारी तथा हथगोलों की बौछार से दोनों घायल हो गए। उन्होंने गोलीबारी का जवाब देकर आतंकवादियों को हतोत्साहित कर दिया, और उनमें से एक आतंकवादी ने बच निकलने का प्रयास किया। वह कोई नुकसान पहुंचाता या भाग निकलता इससे पहले ही मेजर सोही ने तत्परता दिखाते हुए उसे मार डाला। तुरंत ही एक अन्य आतंकवादी खतरनाक ढंग से मेजर सोही पर झपटा। मेजर सोही अपने गहरे घावों की बिल्कुल चिंता किए बिना फौलादी हिम्मत दिखाकर उससे भिड़ गए तथा गुत्थम-गुत्था लड़ाई में उसे मार डाला। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना मेजर सोही गहरे घावों के बावजूद एक सैनिक से दूसरे सैनिक के पास जाते रहे तथा सुरक्षित स्थान पर ले जाने से मना करते हुए अपनी सैन्य टुकड़ियों की कमान संभालते रहे तथा अपनी कार्रवाइयों से उन्हें प्रोत्साहित करते रहे। परिणामस्वरूप, 50 मिनट की भिड़ंत में छह दुर्दांत आतंकवादी मारे गए। एक अमरीकी कार्बाइन, गोलाबारूद, पांच चीनी हथगोले, संचार-उपस्कर तथा काफी मात्रा में आपराधिक दस्तावेज और अन्य सामग्री बरामद की गई।

मेजर बलराज सिंह सोही ने आतंकवादियों का सामना करते हुए वीरता तथा आक्रामक भावना का प्रदर्शन किया।

11. **2480359 नायक बाबु सिंह**
पंजाब/37 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख :10 सितंबर, 2001)

नायक बाबु सिंह 10 सितंबर, 2001 को जम्मू-कश्मीर के उधमपुर के हसोट गांव में थांडसु में तलाशी आपरेशन के दौरान कंपनी कमांडर की कॉलम के सदस्य थे।

0600 बजे जब तीन ढोकों पर घेरा डाला जा रहा था तो एक घर से सिविलियनों का एक दल निकलकर दूर भागने लगा। चेतावनी देने पर, सिविलियन रुक गए परंतु दो शाल ओढ़े हुए आतंकवादियों ने सैन्य टुकडियों पर गोलियां चलाई तथा दौड़ने लगे। नायक बाबु सिंह को शुरूआती गोलियां ही छाती तथा पेट में आ लगीं। तथापि, घातक घावों की बिल्कुल भी परवाह किए बिना उन्होंने अपने साथी का हथियार उठाया तथा आतंकवादियों के पीछे दौड़ने लगे तथा शहीद होने से पहले दोनों आतंकवादियों को उड़ा दिया।

भिड़ंत के दौरान बाबु सिंह ने सिविलियनों की सुरक्षा को ध्यान में रखा तथा यह सुनिश्चित किया कि गोलीबारी केवल आतंकवादियों पर ही की जाए जब वे सिविलियनों से अलग हों।

इस प्रकार नायक बाबु सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में अडिग साहस, दुर्लभ वीरता तथा निर्दोष सिविलियनों की सुरक्षा के प्रति चिंता का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

12. **एस एस-37244 मेजर जोधवीर सिंह**
1/4 गोरखा राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 12 सितंबर,2001)

मेजर जोधवीर सिंह, कुपवाड़ा, जम्मू-कश्मीर के राजाराम दी लारी के ऊबड़-खाबड़ तथा ऊंचे क्षेत्र में विदेशी आतंकवादियों के एक समूह को तलाश कर खदेड़ने तथा सफाया करने का कार्य सौंपे गए विशेष मिशन गश्ती दल के मुखिया थे।

चार दिन के लगातार आपरेशन के बाद 12 सितंबर,2001 को इस गश्ती दल की भिड़ंत भारी हथियारबंद विदेशी आतंकवादियों से हो गई जिसके फलस्वरूप एक भयंकर लड़ाई शुरू हो गई। सुरक्षित स्थलों से गोलीबारी करके आतंकवादियों ने हमारी सैन्य टुकड़ियों को घेर लिया जिससे उनकी जान जोखिम में पड़ गई और इस तरह स्थिति नाजुक हो गई। मेजर जोधवीर सिंह गोलीबारी की आड़ लेकर आतंकवादियों के पीछे रेंगकर उनके पास पहुंच गए जिससे वे भौंचक्के रह गए तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना शत्रु की गोलीबारी के बीच से बहादुरी से आक्रमण करते हुए दो आतंकवादियों को

उड़ा दिया। ज्योंहि अन्य आतंकवादियों ने भागना शुरू किया मेजर जोधवीर सिंह ने तेजी से पीछा करते हुए उन्हें जा पकड़ा तथा बच निकलने के रास्तों पर अपने आदमियों को लगाया। इसके बाद उन्होंने अकेले ही नजदीकी भिड़ंत एक अन्य आतंकवादी को मार गिराया। उनके व्यक्तिगत उदाहरण से प्रेरित होकर उनके आदमियों ने दो और आतंकवादियों को मार डाला।

मेजर जोधवीर सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते समय दुर्लभ व्यक्तिगत बहादुरी, कनिष्ठ नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा अपनी जान को बड़े जोखिम में डालकर अपने आदमियों की जानें बचाई।

13. **आई सी-50189 मेजर राजेश्वर सिंह**
18 मद्रास

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 12 सितंबर,2001)

मेजर राजेश्वर सिंह तंगधार, जम्मू-कश्मीर में अग्रिम रक्षित बस्ती के कंपनी कमांडर थे।

सुव्यवस्थित ढंग से घात लगाकर बैठे सैनिकों ने 12 सितंबर, 2001 को खराब मौसम में घुसपैठ का प्रयास कर रहे छह आतंकवादियों का पता लगाया। मेजर राजेश्वर सिंह ने संयम बरतते हुए आतंकवादियों को लक्षित मारक क्षेत्र में आने दिया। घात पर बैठे सैनिकों ने एकदम भारी गोलीबारी कर दी जिससे एक आतंकवादी मारा गया जबकि दूसरे आतंकवादियों ने एक गुफा में आश्रय ले लिया तथा आर पी जी तथा पिका से गोली का जवाब देने लगे। मेजर राजेश्वर सिंह हथगोले के टुकड़ों से घायल होने के बावजूद इस आपरेशन का नेतृत्व करते रहे। आतंकवादियों को दबोचने के लिए गश्ती दलों को फिर से तैनात करके इन्होंने गुफा का सफाया करने का साहसिक तथा सटीक निर्णय लिया। अडिग साहस तथा चतुराई का प्रदर्शन करते हुए इन्होंने अपनी दूसरी दिशा से एक एन सी ओ के साथ गुफा पर आक्रमण करके दो आतंकवादियों को मार डाला। इस साहसिक कार्रवाई से उत्साहित होकर एक एन सी ओ ने दूसरे आतंकवादी को मार डाला। मेजर राजेश्वर सिंह ने दबाव बनाकर आतंकवादियों को नीचे धकेल दिया तथा एक अन्य तुरंत तथा साहसिक कदम उठाकर आड़ लेने की कोशिश कर रहे एक आतंकवादी को घातक रूप से घायल कर दिया। अंतिम बचे आतंकवादी को मार कर अगले दिन आपरेशन को सम्पन्न कर दिया गया।

इस प्रकार, मेजर राजेश्वर सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते हुए बहादुरी,अदम्य युद्ध-भावना, भरपूर रणनीतिक कुशाग्र बुद्धि तथा अडिग साहस का प्रदर्शन किया।

14. **एसएस-37700 कैप्टन चन्द्रपाल सिंह खाती,**
4/4 गोरखा राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख :18 सितंबर, 2001)

15 सितंबर, 2001 को एक बटालियन स्तर के आपरेशन के दौरान घातक प्लाटून मणिपुर में तमेंगलोंग जिले की दक्षिणी पट्टी में भूमिगत कैंपों के एक तलाशी और सफाया मिशन पर तुपुल से खोपम घाटी की ओर 0400 बजे चली ।

यह कॉलम तुपुल से चलकर लगातार तीन रातों को रोजाना 15-18 कि.मी. चलते हुए आगे बढ़ा। 18 सितंबर, 2001 को 0300 बजे यह कॉलम सोंगफु गांव के लिए चल पड़ा तथा गांववालों के साथ बातचीत करके भूमिगत कैंपों की जानकारी हासिल की तथा कैंपों की तलाश में 0800 बजे मामोंग गांव के लिए चल दिया । गांव से थोड़ी दूरी पर रहने पर कैप्टन चन्द्रपाल सिंह खाती ने घातक कमांडर को गांव में 30-35 भूमिगत तत्वों की मौजूदगी की सूचना दी । कुछ मिनटों तक उन्हें देखने के बाद कैप्टन चन्द्रपाल सिंह खाती ने अचानक आक्रमण का फायदा उठाने के लिए ऊंचे स्थान पर जाने का निर्णय लिया तथा अच्छे स्थान पर पहुंचने के लिए प्रतिकूल क्षेत्र में से आगे बढ़े । भूमिगत तत्वों के आक्रमण की जद में आने पर टीम के नेता ने कैंप पर अंतिम आक्रमण हेतु अपनी पार्टी को दो भागों में बांटा। कैप्टन खाती तीन अन्य रैंकों के साथ एक उप-टीम में थे तथा उन्हें बाईं ओर से आक्रमण करने का आदेश हुआ। जब यह उप-टीम चुपके से भूमिगत तत्वों के पास पहुंची तब भूमिगत तत्वों ने सभी दिशाओं से उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। इस समय भूमिगतों को मारक जद में पाकर कैप्टन खाती व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अपनी एसाल्ट राइफल से गोलीबारी करते हुए आतंकवादियों पर टूट पड़े जिसके फलस्वरूप दो भूमिगत तत्व मारे गए तथा कई अन्य घायल हो गए ।

इस त्वरित तथा सावधानीपूर्ण कार्रवाई के फलस्वरूप पांच कट्टर भूमिगत तत्व मारे गए तथा हथियार/गोलाबारूद और अन्य उपस्करों की बरामदगी हुई ।

कैप्टन चन्द्रपाल सिंह खाती ने भूमिगत तत्वों से लड़ते हुए अडिग साहस, वीरता तथा अदम्य भावना का प्रदर्शन किया ।

15. **3183763 नायक रीत राम**
7 जाट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 सितंबर, 2001)

नायक रीतराम 18 सितंबर, 2001 को 2130 बजे पांच आतंकवादियों के घुसपैठ करने की सूचना मिलने पर जनरल क्षेत्र गोल्ढ, जम्मू-कश्मीर में तैनात घेराबंदी टुकड़ी में शामिल थे।

नायक रीत राम का स्टॉप उस घर के पश्चिम में स्थित था जिसमें आतंकवादी आश्रय लिए हुए थे। 19 सितंबर, 2001 को लगभग 0700 बजे यह जानकर कि वे घिर गए हैं आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी। यद्यपि सैन्य टुकड़ियों ने आतंकवादियों पर गोलीबारी की, परंतु यह बेकार सिद्ध हुई तथा ऊंची मक्का की फसल में उन्हें भाग जाने का मौका मिल गया। यह भांपकर नायक रीतराम आतंकवादियों द्वारा उनपर भारी गोलीबारी किए जाने के बावजूद घर की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ा तथा घर की छत पर चढ़ गया जहां पर उसने धीरे से विध्वंसक सामग्री लगा दी ताकि एक भी आतंकवादी न बच सके। यद्यपि एक आतंकवादी ने उन पर हथगोला फेंका तथा गोली चलाई, फिर भी उन्होंने अपना कार्य पेशेवर ढंग से किया । इसके बाद वे रणनीतिक चाल चलकर नीचे उतर आए तथा विस्फोटक सामग्री को उड़ा दिया। जिससे एक जिला कमांडर सहित चार दुर्दांत आतंकवादियों का सफाया हो गया।

नायक रीत राम ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए अद्वितीय साहस और वीरता का प्रदर्शन किया।

16. **3186838 सिपाही मंजीत**
6 जाट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 सितंबर, 2001)

27 सितंबर, 2001 को विश्वसनीय स्रोतों से असम के हटीगढ़ तथा कुमारी गांव जनरल क्षेत्र में आतंकवादियों की मौजूदगी की संभावना के बारे में सूचना मिली। तलाशी टीमों को तैनात करके बटालियन ने तुरंत कार्रवाई की।

हटीगढ़ में तलाशी आपरेशन के वक्त एक कंपनी के सैक्शन पर 0500 बजे कारगर तथा भारी गोलीबारी होने लगी। गोलियों के आदान-प्रदान में दो लोगों को गंभीर घाव लगे तथा सिपाही मंजीत को

गोली के हल्के घाव लगे। जंगल तथा घनी झाड़ियों का फायदा उठाते हुए आतंकवादी मैदान छोड़कर खुजी गांव की तरफ भागने लगे। सिपाही मंजीत सिंह ने अपने घावों की परवाह न करते हुए सैक्शन की कमान संभाली तथा भागते आतंकवादियों का पीछा करने लगे। वे खुजी के एक घर में आतंकवादियों को घेरने में सफल हो गए। आतंकवादियों ने सैनिकों पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। सिपाही मंजीत ने अपने सैक्शन को तैनात किया तथा एक अन्य रैंक के साथ मोर्चा संभाला तथा कारगर ढंग से बच निकलने के रास्ते को घेर लिया। अपने साथियों की गोलीबारी की आड़ में वे रेंगकर खिड़की के पास आए तथा घर के अंदर एक हथगोला फेंका। इससे आतंकवादियों में भय फैल गया तथा दो आतंकवादी लगातार गोलियां चलाते हुए घर से बाहर आए जिससे सिपाही मंजीत सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद सिपाही मंजीत ने नजदीकी लड़ाई में एक उग्रवादी को मौत के घाट उतार दिया। तथापि, वे सुरक्षित स्थान पर ले जाते वक्त वीरगति को प्राप्त हुए।

सिपाही मंजीत सिंह ने अपनी सुरक्षा की चिंता न करते हुए आतंकवादियों के साथ लड़ाई में सराहनीय साहस तथा बहादुरी का प्रदर्शन किया और सर्वोत्तम बलिदान दिया।

17. **एस एस-36999 मेजर विजित कुमार सिंह**
आर्टिलरी, 17 पैरा एफ डी रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 04 अक्तुबर,2001)

दक्षिण असम में आपरेशन राइनो में तैनात मेजर विजित कुमार सिंह 04 अक्तूबर, 2001 को ग्राम नामदाइलोंग, कछार असम में तलाशी तथा सफाया अभियान का नेतृत्व कर रहे थे जहां पर 10-12 सशस्त्र आतंकवादी आश्रय लिए हुए बताए गए थे।

मेजर विजित कुमार सिंह ने खतरे के बारे में अच्छी तरह जानते हुए भी एक अग्रणी स्काउट होने का निर्णय लिया। कठिन यात्रा के बाद 04 अक्तूबर, 2001 को 0600 बजे यह गश्ती दल गांव के बाहर पहुंचा। गांव में प्रवेश आंशिक रूप से टूटे हुए बांस के पुल से था जिसे इस अफसर के द्वारा सावधानीपूर्वक पार किया गया था। ज्योंही यह अफसर सुरक्षित स्थान पर पहुंचने के प्रयास में दूसरे किनारे पर पहुंचा तो पुल से 20-30 मीटर की दूरी पर स्थित धान के खेत से आतंकवादियों के एक दल द्वारा उन पर अंधा-धुंध गोलीबारी की गई। उन्होंने गोलीबारी का जवाब दिया तथा आतंकवादियों पर टूट पड़े। इस कार्रवाई की प्रचंडता ने आतंकवादियों को धान के खेत में से नाले की ओर भागने पर मजबूर कर दिया। लड़ाकू आक्रामकता का प्रदर्शन करते हुए मेजर विजित कुमार सिंह ने अपने साथी के साथ आतंकवादियों का पीछा करना शुरू कर दिया। उन्हें अपने पास पहुंचते देख आतंकवादियों ने उनको

रोकने के लिए उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। परिणामस्वरूप एक आतंकवादी मैदान की ओर भागा जबकि दो ने अपने हथियार और थैले छोड़ दिए तथा नाले में उतर गए।

मेजर विजित कुमार सिंह ने सोचा कि तीनों विद्रोही घायल हो गए हैं तथा अनुकरणीय साहस तथा अडिग निश्चिय का प्रदर्शन करते हुए नाले की ओर दौड़े। इसी दौरान धान के खेत में गिरे हुए आतंकवादी ने अपना हथियार उठाया तथा उनके साथी पर गोली बारी शुरू कर दी। मेजर विजित कुमार सिंह इस आतंकवादी पर टूट पड़े, इस दौरान आतंकवादी द्वारा चलाई गई गोली से इस अधिकारी को घातक घाव लगे। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद इस अफसर ने अंतिम प्रयास में आतंकवादी को गोली से उड़ा दिया। मेजर विजित कुमार सिंह मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए परंतु इससे पहले उन्होंने अपने साथी और टुकड़ी की जान बचा ली। दो घायल आतंकवादियों के शव बाद में ग्रामीणों द्वारा बरामद किए गए।

इस कार्रवाई में मेजर विजित कुमार सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते हुए भयानक आक्रामक भावना ,सखा भाव तथा दायित्व से बढ़कर साहस का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

18. **9420553 राइफलमैन रमेश प्रसाद खनाल**
3/11 गोरखा राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 6 अक्तूबर, 2001)

राइफलमैन रमेश प्रसाद खनाल चार्ली कंपनी के प्रथम स्काउट थे । जब 6 अक्तूबर, 2001 को गांव टोपा थेरा, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में उनका कॉलम तलाशी ले रहा था तब एक घर में छिपे आतंकवादियों ने उन पर भारी गोलीबारी कर दी जिससे कॉलम घिर गया तथा आगे नहीं बढ़ सका।

स्थिति की गंभीरता को देखते हुए एक अन्य रैंक के साथ राइफलमैन स्वेच्छा से उस कमरे में घुसने के लिए आगे आए जहां से आतंकवादी गोली बरसा रहे थे । वे धीरे से रेंगकर खिड़की के पास पहुंचे तथा खिड़की से कमरे में प्रवेश करके आतंकवादियों को भौचक्का कर दिया। हथगोला फेंक कर उन्होंने खिड़की के पास एक आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया तथा कमरे के अंदरूनी भाग की ओर मुड़ते हुए आतंकवादियों की गोलीबारी के एकदम सामने जा कर उन्होंने फौलादी हौसलों के साथ दुर्लभ साहस तथा अचूक निशानेबाजी का परिचय देते हुए दूसरे आतंकवादी को गोली से उड़ा दिया। बचे हुए दूसरे आतंकवादी ने दूसरे कमरे से पीछे हटते हुए भारी गोलीबारी शुरू कर दी। परंतु राइफलमैन खनाल ने आतंकवादी को गोलीबारी में उलझाए रखा जिससे उनके साथी ने अंतिम उग्रवादी को गोली से

उड़ा दिया।

राइफलमैन रमेश प्रसाद खनाल ने तुरत बुद्धि तथा अत्यंत उच्च दर्जे की उत्कृष्ट बहादुरी का प्रदर्शन किया ।

19. **2985593 हवलदार चंदन मल,**
राजपूत/23 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अक्तूबर 2001)

हवलदार चंदन मल 15 अक्तूबर, 2001 को थानामंडी, राजौरी, जम्मू-कश्मीर में तलाशी तथा सफाया आपरेशन के एक भाग के रूप में कॉलम का नेतृत्व कर रहे थे ।

आतंकवादी से भिड़ंत होने पर हवलदार चंदन मल ने गोलीबारी का जवाब दिया तथा अपनी टुकड़ी को आतंकवादी को एक नाले में घेरने के लिए निर्देश दिया । कंपनी कमांडर ने घेरा डालने के लिए अतिरिक्त टुकड़ियों की व्यवस्था की तथा समन्वित गोलीबारी की । इसी बीच हवलदार चंदन मल अपने साथी के साथ आतंकवादी के नजदीक पहुंचे । दृढ़ निश्चय, अदम्य साहस तथा अनुकरणीय उत्साह का प्रदर्शन करते हुए, हवलदार चंदन मल व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना झाड़ियों में से रेंगकर आतंकवादी के पांच मीटर नजदीक तक चले गए तथा उसे गोली मार दी । जब दूसरे आतंकवादी ने गोलीबारी शुरू की तो हवलदार चंदनमल ने कंपनी कमांडर को सूचना दी तथा घेरा डालने के लिए अपनी पार्टी को व्यवस्थित किया । हवलदार चंदन मल ने फिर से आगे बढ़कर नजदीकी भिड़त में आतंकवादी को गोली से उड़ा दिया ।

हवलदार चंदन मल ने आतंकवादियों द्वारा की जा रही गोलीबारी के समक्ष बहादुरी, अडिग निश्चय तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया ।

20. **जे.सी. 538291 सूबेदार सत्य प्रकाश**
कुमाऊं/26 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख :18 अक्तूबर, 2001)

कुमुक कमांडर के रूप में सूबेदार सत्यप्रकाश तथा उनकी पार्टी ने 18 अक्तूबर, 2001 को

गनदोह, डोडा जम्मू-कश्मीर में एक आपरेशन के दौरान गांव से बच निकले आतंकवादियों को खदेड़कर सफाया करने के लिए काको नाला में तलाशी शुरू की।

1445 बजे आतंकवादियों ने तलाशी पार्टी पर स्वचालित हथियारों से गोलियों की बौछार शुरू कर दी । सूबेदार सत्यप्रकाश को माथे में गोली लगी। घाव के बावजूद वे रेंगकर उपयुक्त फायरिंग स्थान पर पहुंचे तथा अपनी टुकड़ी को तैनात किया । पूरे निश्चय, साहस तथा शक्ति को जुटाकर उन्होंने आतंकवादियों पर गोले फेंके तथा अपनी एके-47 राइफल से गोलीबारी करते हुए धावा बोल दिया। उन्होंने इस साहसिक कार्रवाई में दो दुर्दांत आतंकवादियों को नजदीक से गोली मार दी। इसके बाद वह बहादुर जूनियर कमीशन अफसर घावों के कारण शहीद हो गए।

सूबेदार सत्यप्रकाश ने अपनी टुकड़ी की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए अनुकरणीय युद्धस्थल नेतृत्व, व्यक्तिगत बहादुरी तथा वीरता का प्रदर्शन किया तथा आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

21. **जेसी-634214 सूबेदार ज्ञान बहादुर लिम्बू**
3/11 गोरखा राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख :22 अक्तूबर, 2001)

सूबेदार ज्ञान बहादुर लिम्बू, गांव नाका, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में कॉलम कमांडर थे।

22 अक्तूबर, 2001 को लगभग 0930 बजे जब तलाशी और सफाया आपरेशन चलाया जा रहा था तो उनके कॉलम को आतंकवादियों द्वारा भारी गोलीबारी करके घेर लिया गया जो कि घनी झाड़ियों और बड़े-बड़े पत्थरों से ढ़के नाले में छिपे हुए थे। खुले में तथा प्रतिकूल स्थिति में होने के कारण अपनी सैन्य टुकड़ियों के समक्ष आए खतरे को देखकर सूबेदार लिम्बू ने आतंकवादियों को घेरने का निर्णय लिया। अपने कॉलम को आड़ लेकर लगातार गोलीबारी करते रहने का निर्देश देते हुए उन्होंने अकेले ही छिपे आतंकवादियों को घेर लिया तथा नजदीक से खुले में आकर पहले आतंकवादी पर टूट पड़े तथा अपनी राइफल से उसका सफाया कर डाला। उनके शरीर में गोलियों की बौछार आ लगी तथा उनकी राइफल गिर गई । दूसरे आतंकवादी ने कॉलम पर कारगर गोलीबारी शुरू कर दी । गंभीर घावों तथा अत्यधिक रक्त स्राव के बावजूद सुरक्षित स्थान पर ले जाने से मना करते हुए अपने व्यक्तिगत हथियार की अनुपस्थिति में दुर्लभ बहादुरी तथा साहसिक कार्रवाई करते हुए सूबेदार लिम्बू ने दूसरे आतंकवादी को भी मार डाला। इस कार्रवाई में वे शहीद हो गए।

सूबेदार ज्ञान बहादुर लिम्बू ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में अनुकरणीय वीरता तथा विलक्षण युद्धक नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

22. **822324 एनसी (ई) प्रकाश शिवाजी गंगावने**
लश्कर (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अक्तूबर, 2001)

22 अक्तूबर, 2001 को 1330 बजे लश्कर-ए-तैयबा के चार सशस्त्र पाकिस्तानी आतंकवादियों ने वायुसेना स्टेशन अवंतिपुर के मुख्य द्वार पर आक्रमण कर दिया । उनका उद्देश्य वायुसेना स्टेशन के अंदर पहुंचकर विमान, मिसाइल परिसरों को नष्ट करके कार्मिकों तथा उनके परिवारों में आतंक फैलाना था । आतंकवादी एके-47 एसाल्ट राइफलों तथा उच्च विस्फोटक हथगोलों से लैस थे ।

एनसी(ई) प्रकाश एसजी मुख्य द्वार पर तैनात थे । घुसपैठियों को देखकर उन्होंने पहचान बताने को कहा तथा गेट खोलने से इनकार कर दिया । आतंकवादियों द्वारा धक्कामुक्की करने पर उन्होंने अपने जीवन को खतरे में देख ड्यूटी पर तैनात संतरियों को सचेत करने के लिए शोर मचाया । उनको बिल्कुल नजदीक से गोली मारी गई परंतु वे आतंकवादियों को मुख्य गार्ड रूम में प्रवेश करने से रोकते रहे तथा आतंकवादियों की गोलियों से शहीद हो गए। उन्होंने आतंकवादियों को खदेड़ने के लिए उपयुक्त मोर्चा संभालने में सुरक्षा बलों की मदद करने के लिए जीवन बलिदान कर दिया । उन्होंने दुर्लभ साहस का प्रदर्शन किया तथा भारतीय वायुसेना के वायु- योधाओं की बेहतरीन परंपरा के अनुरूप कार्य किया ।

एनसी(ई) प्रकाश शिवाजी गंगावने ने आतंकवादियों का सफाया करते हुए उत्कृष्ट बहादुरी, अडिग साहस, तुरत बुद्धि का प्रदर्शन करते हुए अपने जीवन का बलिदान कर दिया ।

23. **10228076 सिपाही सतीश बर्डे,जीडी, डीएससी**

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अक्तूबर, 2001)

22 अक्तूबर, 2001 को 1330 बजे लश्कर-ए-तैयबा के चार सशस्त्र पाकिस्तानी आतंकवादियों ने वायुसेना स्टेशन अवंतिपुर के मुख्य द्वार पर आक्रमण कर दिया । उनका उद्देश्य वायुसेना स्टेशन के अंदर पहुंचकर विमान, मिसाइल परिसरों को नष्ट करके कार्मिकों तथा उनके परिवारों में आतंक फैलाना था । आतंकवादी एके-47 एसाल्ट राइफलों तथा उच्च विस्फोटक हथगोलों से लैस थे ।

सिपाही सतीश बर्डे इस आक्रमण के समय एस एल आर डी एस सी पोस्ट पर तैनात थे । अत्यंत चौकन्ना रहने के कारण उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया दिखाते हुए अपनी पोस्ट के दो अन्य गार्डों को भी सचेत किया । उन्होंने अपनी एसएलआर से तुरंत उस वाहन पर गोलीबारी शुरू कर दी जहां से आतंकवादियों ने शुरूआती गोलीबारी की थी । उन्होंने अपनी गहन गोलीबारी से दो आतंकवादियों को गंभीर रूप से घायल करके आतंकवादियों को मुख्य गेट की ओर बढ़ने से रोका । वे भारी गोलीबारी के मध्य अपनी पोस्ट पर रणनीतिक मोर्चा लेकर जमे रहे तथा आतंकवादियों को हताहत कर दिया । अपने जीवन के प्रति खतरे की परवाह किए बिना वे निरंतर गोलीबारी करते रहे तथा कार्रवाई में शामिल लोगों को आतंकवादियों के मारे जाने तक निर्देश देते रहे । यदि आतंकवादी स्टेशन में घुसने में कामयाब हो जाते तो यह एअर बेस के लिए प्रलयंकारी हो सकता था ।

सिपाही सतीश बर्डे ने आतंकवादियों का सफाया करने में उत्कृष्ट बहादुरी, अडिग साहस, तुरतबुद्धि का प्रदर्शन किया ।

24. **टोकन सं. 998 मजदूर रवि बहादुर,**
सीमा सड़क संगठन (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 अक्तूबर, 2001)

श्री रवि बहादुर को 21.9.1999 को टोकन संख्या 998 के तहत मजदूर के रूप में भर्ती किया गया था । 24 अक्तूबर, 2001 को 147.600 बालीपाड़ा-चारदौर-तावांग रोड पर विस्फोट के बाद डोजर बीडी 80 ईएम संख्या 99 जी-28257 के द्वारा चट्टान का मलबा हटाया जा रहा था । श्री रवि बहादुर को कार्मिकों को संभावित खतरे की अग्रिम सूचना देने के लिए उक्त डोजर के साथ तैनात किया गया था । दुर्भाग्य से उस दिन 1545 बजे जब यह डोजर चट्टानी मलबे को हटा रहा था तो अचानक सड़क के ऊपर बाहर को निकली हुई चट्टान से एक शिलाखण्ड अलग हो गया तथा नीचे की ओर गिरने लगा । श्री रवि बहादुर ने चट्टान की गति का सही आकलन किया तथा अन्य सात मजदूरों तथा डोजर ऑपरेटर को, जोकि वहां पर कार्य कर रहे थे, दूर भाग जाने को कहा जिससे वे सभी चमत्कारपूर्ण ढंग से बच गए । दुर्भाग्य से वे इसी दौरान स्वयं चट्टानी मलबे के नीचे दब गए तथा उनकी तुरंत ही मृत्यु हो गई ।

श्री रवि बहादुर ने अपने जीवन की परवाह किए बिना सटीक सावधानी तथा चौकन्नेपन से कार्य करते हुए उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन किया तथा अपने साथियों की जान बचाने के लिए सर्वोच्च बलिदान

किया । इस प्रकार उन्होंने निश्चित रूप से एक उदाहरण पेश किया तथा वे दूसरे के लिए सदैव प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे ।

25. **2683896 लांस नायक खादम हुसैन**
15 जम्मू-कश्मीर राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 अक्तूबर, 2001)

31 अक्तूबर, 2001 को 1530 बजे पुंछ, जम्मू-कश्मीर के बांदी का मकान जंगल में नायक खादम हुसैन के अधीन तलाशी पार्टी पर गोलीबारी की गई।

चट्टानी खड़ी कगारों तथा घनी झाड़ियों की वजह से इधर-उधर चलने, गोलीबारी का स्थान तथा दृश्यता भी प्रभावित हो रही थी तथा इससे हमारी गोलीबारी भी बेकार हो रही थी। इसके कारण आतंकवादियों को मारने के लिए समग्र तलाशी के बाद मोर्चाबंदी करके उनके पास पहुंचना जरूरी हो गया था । स्वेच्छा से तलाशी दल का नेतृत्व करते हुए लांस नायक खादम हुसैन अपने साथी की गोलीबारी की आड़ में एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी तक पहुंचने लगे। एक झाड़ी की तलाशी के दौरान उनकी दो आतंकवादियों से आमने-सामने भिड़ंत हो गई जिन्होंने उन पर गोलीबारी शुरू कर दी। फुर्ती से कार्रवाई करते हुए स्वयं की सुरक्षा की परवाह किए बिना लांस नायक हुसैन ने एक तरफ कूदते हुए अपनी राइफल के बट से आतंकवादी पर वार किया तथा जोरदार जवाब देते हुए एक आतंकवादी को वहीं मार गिराया तथा दूसरे को घायल कर दिया । उन पर गोली चलाते हुए घायल आतंकवादी पहाड़ी से नीचे की ओर लुढ़क गया तथा भागने का प्रयास करने लगा । असाधारण पहल का प्रदर्शन करते हुए लांस नायक हुसैन ने भागते आतंकवादी का पीछा किया तथा अकेले ही आतंकवादी को पकड़ लिया तथा आतंकवादी के मरने से पहले उससे महत्वपूर्ण जानकारी हासिल की। उनसे दो एके राइफलें तथा दो रेडियो सेट बरामद किए गए।

लांस नायक खादम हुसैन ने आतंकवादियों के साथ लड़ते हुए अनुकरणीय बहादुरी, अद्वितीय पहल तथा अडिग साहस का प्रदर्शन किया।

26. **2479576 हवलदार दलविन्दर सिंह**
17 पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख :09 नवंबर, 2001)

हवलदार दलविंदर सिंह कमान अफसर की त्वरित कार्रवाई टुकड़ी में चालक की ड्यूटी कर रहे थे। अनंतनाग, जम्मू-कश्मीर के कोगुंड गांव में एक घर में तीन आतंकवादियों की मौजूदगी की निश्चित सूचना के आधार पर 09 नवंबर, 2001 को 1730 बजे एक आपरेशन शुरू किया गया।

संदिग्ध घरों को 1800 बजे तक घेर लिया गया तथा 1845 बजे गोलीबारी शुरू हो गई। कमान अफसर की त्वरित कार्रवाई टुकड़ी 1900 बजे मौके पर पहुंची। लगभग 2200 बजे हवलदार दलविन्दर सिंह रेंगकर घर से बाहर निकलने के उस अगले दरवाजे पर पहुंचे जहां से आतंकवादी गोलीबारी कर रहे थे। 2230 बजे दो आतंकवादी घेरे को तोड़ने के लिए अपने हथियारों से गोली चलाते हुए बाहर की ओर भागे। हवलदार दलविन्दर सिंह भागते आतंकवादियों पर टूट पड़े उनके द्वारा की गई भारी गोलीबारी में अडिग रहते हुए बहुत नजदीक से दोनों आतंकवादियों को गोली से उड़ा दिया। इन आतंकवादियों से बड़ी मात्रा में हथियार, गोलाबारूद तथा आपराधिक दस्तावेजी बरामद किए गए।

हवलदार दलविंदर सिंह ने आतंकवादियों द्वारा निरंतर गोलीबारी के बीच अनुकरणीय तुरत बुद्धि, बहादुरी तथा अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

27. **एसएस-37277 कैप्टन संजीव सिरोही,**
आर्टिलरी/23 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभारी तारीख : 17 नवंबर, 2001)

17 नवंबर, 2001 को कैप्टन संजीव सिरोही के अधीन चार कॉलमों को थानामंडी, राजौरी, जम्मू-कश्मीर में स्टॉप लगाने तथा क्षेत्र की तलाशी का कार्य सौंपा गया था ।

कैप्टन संजीव सिरोही के अधीन कॉलमों पर लगभग 1500 बजे नाले से भारी गोलीबारी की गई । आतंकवादियों को भागने से रोकने के लिए उन्होंने नाले के आस-पास के क्षेत्र को घेर लिया तथा नाले में राकेट लांचर तथा स्वचालित हथियारों से भारी गोलीबारी की तथा हथगोलों का भी इस्तेमाल किया गया । अंधेरा होने के कारण वे अंततः एक छोटी टुकड़ी का नेतृत्व करते हुए रेंगकर आगे बढ़े तथा नाले में हथगोले फेंकी। उसके बाद कैप्टन सिरोही अपनी टुकड़ी की गोलीबारी की आड़ में आतंकवादियों की गोलीबारी के बीच पत्थरों की आड़ का इस्तेमाल करते हुए आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे तथा नजदीकी लड़ाई में अकेले ही तीन आतंकवादियों को मार डाला ।

कैप्टन संजीव सिरोही ने आतंकवादी गोलीबारी के समक्ष उत्कृष्ट व्यक्तिगत नेतृत्व तथा बहादुरी का प्रदर्शन किया तथा अपनी सैन्य टुकड़ियों को बिना किसी प्रकार के नुकसान/चोट के तीन कट्टर आतंकवादियों को मार गिराया ।

28. **आई सी- 59069 लेफ्टिनेंट मानव यादव**
1 पैरा (एस एफ)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख :18 नवंबर, 2001)

ग्राम हरि, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों के मौजूद होने की सूचना मिलने पर 18/19 नवंबर, 2001 की रात को एक आपरेशन शुरू किया गया।

जब एक कॉलम ऊँचाई पर पहुंच गया तो लेफ्टिनेंट मानव यादव दुश्मन को अचंभे में डालते हुए अपने कॉलम के साथ पनियाली नाले से होकर लक्ष्य पर पहुंचे। 0645 बजे उन्होंने एक ढ़ोक के बाहर एक संदिग्ध आतंकवादी को देखा। इस बात की पुष्टि करने के लिए उक्त व्यक्ति आतंकवादी ही है लेफ्टिनेंट मानव यादव भेष बदलकर उसके पास आए तथा इससे पहले कि आतंकवादी हथियार निकालता उसे गोली मार दी। एकदम तीन आतंकवादी पनियाली नाले में लेंफ्टिनेंट मानव यादव पर अंधाधुंध गोलीबारी करते हुए दौड़कर बाहर आए। सही निणर्य का प्रदर्शन करते हुए तथा पहल करते हुए इस अफसर ने आतंकवादियों का पीछा किया । बिना वक्त गवाए, गति बनाए रखते हुए उन्होंने दो और आतंकवादियों को मार डाला जबकि एक अन्य गुफा में प्रवेश कर गया। अडिग निश्चय, जिद तथा अदम्य साहस का परिचय देते हुए वे तेजी से गुफा में प्रवेश कर गए तथा चौथे आतंकवादी को मार गिराया। इस कार्रवाई के फलस्वरूप हथियार तथा गोलाबारूद की बरामदगी हुई।

लेफ्टिनेंट मानव यादव ने व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना प्रतिकूल परिस्थितियों में दायित्व से बढ़कर अनुकरणीय साहस, अडिग निश्चय तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

29. **आई सी-53629 मेजर सुनीत सिंह**
महार/1राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 30 दिसंबर,2001)

मेजर सुनीत सिंह ने कार्रवाई योग्य आसूचना के आधार पर 30 दिसंबर, 2001 को पुलवामा,

जम्मू-कश्मीर के दुरापुरा गांव को घेरने के लिए अपने कॉलम का नेतृत्व किया। गांव में जमा आतंकवादियों ने गोलियों की भारी बौछार कर दी, जिससे लक्षित घरों की पहचान करना मुश्किल हो गया।

कुछ खाली स्थान पाकर जब मेजर सुनीत सिंह एक गली में आगे बढ़े तो एक घर के अंदर से आतंकवादियों ने गोलीबारी की भारी बौछार कर दी। इसकी परवाह न करते हुए दल का उस घर को घेरने का निर्देश देकर मेजर सिंह ने अपूर्व वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपने साथी के साथ बिना दुश्मन की नजर में आए भारी गोली बारी के बीच रेंगकर घर के पास पहुंचे । व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना एक साहसिक कार्रवाई में उन्होंने एकसाथ दो हथगोले घर के अंदर फैंके जिससे दो आतंकवादी मारे गए। एक आतंकवादी ने हथगोला फैंका जिससे मेजर सुनीत सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। अत्यधिक रक्तस्राव तथा घाव के बावजूद मेजर सुनीत सिंह ने अपने दल को उस मकान पर कारगर गोलीबारी करने का निर्देश दिया। एक आतंकवादी कूदने के प्रयास में खिड़की के नजदीक आया। मेजर सुनीत सिंह उस पर टूट पड़े तथा तत्परता दिखाते हुए उसे मार डाला।

मेजर सुनीत सिंह ने प्रतिकूल परिस्थितियों में उत्कृट व्यक्तिगत बहादुरी और वीरता, अनुकरणीय कनिष्ठ नेतृत्व तथा कारगर कमान और नियंत्रण का प्रदर्शन किया।

30. **4569688 सिपाही राजबीर**
महार/1 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 दिसंबर, 2001)

30 दिसंबर, 2001 को जम्मू-कश्मीर के पुलवामा के दुरापुरा गांव में एक तलाशी आपरेशन के दौरान सिपाही राजबीर एक अफसर के साथी थे। गांव के घेरे के दौरान घेरा पार्टी पर आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी।

इससे बिना घबराए अपने साथी के साथ सिपाही राजबीर 6-7 आतंकवादियों के कब्जे में एक घर के नजदीक आ पहुंचे । सीमित कवर के कारण आतंकवादी कारगर गोलीबारी करने लगे । आतंकवादियों के गोलीबारी के बीच वे अपने साथी के साथ रेंगकर लक्षित घर की खिड़की के नीचे पहुंचे। एक साहसपूर्ण कार्रवाई में सिपाही राजबीर ने घर के अंदर दो हथगोले फैंके और एक आतंकवादी को मार डाला। इस कार्रवाई में, उन्हें भी आतंकवादियों की यू बी जी एल गोलीबारी में गोलियों के टुकड़ों से घाव लगे। अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद उन्होंने अपना स्थान छोड़ने से मना कर

दिया। बच निकलने की कोशिश में अंधा धुंध गोलीबारी करते हुए दो आतंकवादी खिड़की से बाहर कूदे। स्वयं की सुरक्षा की चिंता न करते हुए निढ़ाल होते हुए भी सिपाही राजबीर ने अपने व्यक्तिगत हथियार से गोली चला कर उनको ढेर कर दिया। इसके बाद यह बहादुर सिपाही घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गया ।

सिपाही राजबीर ने आतंकवादियों से लड़ते हुए अद्वितीय बहादुरी, दृढ निश्चय का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

31. **आई सी-42448 मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी**
7 जाट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 07 जनवरी 2002)

मेजर तनवीर सिद्दीकी को जम्मू-कश्मीर में गोल्ढ गांव में सात आतंकवादियों के एक दल के होने की सूचना मिली तथा उन्होंने 07 जनवरी, 2002 को उसकी घेराबंदी की ।

रात को 0010 बजे घुप्प अंधेरे में आतंकवादियों से भिड़ंत हुई तथा सारी रात गोलीबारी होती रही। भागने का प्रयास करते हुए तीन आतंकवादियों ने नाले के अंदर शिलाखण्डों के बीच मोर्चा संभाल लिया तथा सैन्य टुकड़ी पर भारी गोलीबारी की। सैन्य टुकड़ी के लिए गंभीर खतरे को भांपते हुए तथा अपनी गोलीबारी को कारगर न पाकर मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी 1030 बजे आगे बढ़े परंतु नाले में स्थित आतंकवादियों ने उन पर भारी गोली बारी कर दी। इससे भयभीत हुए बिना यह अफसर गोलियों की बौछार के बीच रेंगकर आगे बढ़े और दो आतंकवादियों पर टूट पड़े तथा नजदीकी भिड़ंत में उन्हें उड़ा दिया। इसके बाद, तीसरा आतंकवादी उन पर भारी गोलीबारी तथा हथगोला फैंकते हुए उन पर झपटा परंतु मेजर सिद्दीकी द्वारा मारा गया। इसके बाद, वे एक अन्य रैंक के साथ दो अन्य आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे । मेजर सिद्दीकी रेंगकर एक अन्य आतंकवादी के पास पहुंचे तथा भयंकर गुत्थम-गुत्था लड़ाई में उसे मार डाला। इस कार्रवाई से प्रेरित होकर अन्य रैंक ने शेष तीन आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

मेजर तनवीर अहमद सिद्दीकी ने आतंकवादियों के समक्ष वीरता, अडिग निश्चय तथा असाधारण सैनिकोचित सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया।

32. **3192315 सिपाही सुनील कुमार**
7 जाट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 जनवरी, 2002)

सिपाही सुनीत कुमार 07 जनवरी 2002 को 0010 बजे गांव गोल्ढ, जम्मू-कश्मीर में जब आतंकवादियों के साथ भिड़ंत के समय त्वरित कार्रवाई टुकड़ी के सदस्य थे, जिसके बाद सारी रात रुक-रूक कर गोलीबारी का आदान-प्रदान होता रहा।

सिपाही सुनीत कुमार द्वारा प्रदान की गई गोलीबारी की आड़ में लगभग 1045 बजे एक अफसर नाले में जमे तीन आतंकवादियों के पास पहुंचा तथा उनका सफाया कर दिया । शेष चार आतंकवादी दो दलों में बंट गए। इस अफसर के साथ सिपाही सुनील कुमार आतंकवादियों के नजदीक पहुंचे, वे खुल में आ गए, इसके बाद रेंगकर आगे बढ़े तथा हथगोला फेंककर एक आतंकवादी को मार डाला जबकि दूसरे का सफाया अफसर द्वारा कर दिया गया।

शेष दो आतंकवादियों ने घनी झाड़ियों के बीच आश्रय ले लिया था तथा टुकड़ी पर गोलीबारी शुरू कर दी। खतरे को भांपते हुए सिपाही सुनील कुमार आगे बढ़ते रहे तथा शेष दो आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गए तथा संख्या में अधिक होने के बावजूद 6-8 गज की दूरी से उन्हें गोली मार दी।

सिपाही सुनील कुमार ने नाजुक परिस्थितियों में दुर्लभ वीरता, सखाभाव तथा तुरतबुद्धि का परिचय दिया।

33. **आई सी-51945 मेजर राजीव कुमार दहिया**
सिक्ख/16 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख: 22 जनवरी, 2002)

22 जनवरी, 2002 को मेजर राजीव कुमार दहिया के नेतृत्व वाली तलाशी टुकड़ी पर सोलियन, पुंछ, जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा भारी गोलीबारी की गई ।

आतंकवादियों के नजदीक पहुंचने की कोशिश करते समय, 100 मीटर की दूरी पर एक गुफा दिखाई दी जहां पर आतंकवादियों ने आड़ ले रखी थी। पल भर के अंदर निर्णय लेकर मेजर राजीव

कुमार दहिया अपने सहायक दल को तैनात किया तथा अकेले ही गुफा की ओर रेंगने लगे। यह अच्छी तरह जानते हुए कि चार आतंकवादी अभी भी जिंदा थे, उन्होंने गुफा पर टूट पड़ने से पहले हथगोले फैंके तथा गोलियों की बौछार कर दी और इस प्रकार बिल्कुल नजदीक से दो आतंकवादी मार गिराए। इसी बीच इस दुस्साहसिक कार्रवाई से भयभीत होकर दो आतंकवादी बाहर निकलकर नाले में दौड़ गए। असाधारण तुरतबुद्धि का प्रदर्शन करते हुए मेजर दहिया ने ध्यान बांटने के लिए आतंकवादियों की ओर हथगोला फेंका तथा आतंकवादियों पर झपटे तथा अन्य दो आतंकवादियों को भी मार डाला और इस प्रकार अकेले ही चार आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

इस प्रकार मेजर राजीव कुमार दहिया ने अनुकरणीय व्यक्तिगत बहादुरी तथा उच्चतम दर्जे के नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

बरुण मित्रा

(बरूण मित्रा)
निदेशक

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

नई दिल्ली-110001, दिनांक 15.11.2002

इस विभाग की दिनांक 17.4.2002 की अधिसूचना सं. एम-13011/1/96-प्रशा.IV के क्रम में राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन की शासी परिषद के कार्यकाल को और 6(छः) माह अर्थात 31.3.2003 तक बढ़ाया जाता है ।

2. परिषद के दोनों सरकारी एवं गैर सरकारी सदस्य वही रहेंगे और न ही परिषद के विचारार्थ विषयों में कोई परिवर्तन होगा ।

(बी.आर.शर्मा)
अवर सचिव

सं.2/1/2002-बी एम

जल संसाधन मंत्रालय

नई दिल्ली, 13 दिसम्बर, 2002

संकल्प

जल संसाधन मंत्रालय (तत्कालीन सिंचाई मंत्रालय) ने नदियों को परस्पर जोड़कर अधिशेष जल वाले बेसिनों से जल की कमी वाले बेसिनों/क्षेत्रों को जल का हस्तांतरण करके जल संसाधन विकास के लिए वर्ष 1980 में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना तैयार की है । राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के दो मुख्य घटक अर्थात हिमालयी नदी विकास और प्रायद्वीपीय नदी विकास हैं । राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना के अंतर्गत विस्तृत अध्ययन और विस्तृत सर्वेक्षण एवं अन्वेषण करने और संपर्कों की व्यावहारिकता रिपोर्टें तैयार करने के लिए सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अधीन एक सोसाइटी के रूप में वर्ष 1982 में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (एन डब्ल्यू डी ए) की स्थापना की गई थी ।

2. राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने विस्तृत अध्ययन करने के बाद, व्यावहारिकता रिपोर्टें तैयार करने के लिए 30 संपर्कों की पहचान की है और ऐसे 6 संपर्कों की व्यावहारिकता रिपोर्टें तैयार की हैं । विभिन्न बेसिन राज्यों ने राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा तैयार किए गए अध्ययनों और व्यावहारिकता रिपोर्टों के बारे में व्यक्त विचारों में मतभेद है । राज्यों के बीच सर्वसम्मति लाने की दृष्टि से और और प्रत्येक परियोजनाओं के मूल्यांकन के मानकों पर दिशानिर्देश देने तथा परियोजना के वित्तपोषण आदि के लिए केन्द्र सरकार एक कार्य बल का गठन करती है ।

3. यह कार्य बल इस प्रकार होगा :

(i) श्री सुरेश पी. प्रभु, संसद सदस्य (लोकसभा) - अध्यक्ष
(ii) श्री सी सी पटेल, उपाध्यक्ष; और
(iii) डा. सी डी थाटे, सदस्य-सचिव

4. कार्यबल के उपरोक्त सदस्यों के अतिरिक्त, कार्य बल के अध्यक्ष के परामर्श तथा प्रधानमंत्री के अनुमोदन से अंश कालिक सदस्यों को भी नामित किया जायेगा । ये अश: कालिक सदस्य निम्न प्रकार होंगे :

(i) जल की कमी वाले राज्यों से एक सदस्य
(ii) जल की अधिकता वाले राज्यों से एक व्यक्ति
(iii) एक अर्थशास्त्री
(iv) एक समाजशास्त्री ; और
(v) एक विधिक/विश्ववन्यजीव विशेषज्ञ

5. इस कार्य बल के विचारार्थ विषय इस प्रकार होंगे :

(i) आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक-आर्थिक प्रभावों, पर्यावरणीय प्रभावों और पुनर्वास योजनाओं को तैयार करने के संबंध में प्रत्येक परियोजनाओं के मूल्यांकन के मानकों पर दिशा निर्देश मुहैया कराना ;

(ii) राज्यों के बीच त्वरित गति से सहमति बनाने के लिए उपयुक्त तरीके अपनाना;

(iii) विस्तृत परियोजना रिपोर्टों को तैयार करने और क्रियान्वयन के लिए विभिन्न परियोजना घटकों को प्राथमिकता देना ;

(iv) परियोजना के क्रियान्वयन के लिए उपयुक्त संगठनात्मक संरचना का प्रस्ताव देना ;

(v) परियोजना के वित्तपोषण के लिए विभिन्न तौर-तरीकों पर विचार करना; और

(vi) कुछ परियोजना घटकों में शामिल किए जाने वाले अंतर्राष्ट्रीय आयामों पर विचार करना ।

6. कार्य बल का मुख्यालय नई दिल्ली में होगा और जब कभी आवश्यक होगा इसकी बैठक आयोजित की जाएगी ।

7. अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सदस्य-सचिव और अन्य सदस्यों के लिए निबंधन एवं शर्तों पर यथा समय निर्णय लिया जाएगा ।

8. 2016 के अंत तक नदियों को आपस में जोड़ने संबंधी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रमुख उद्देश्य/समय सारणी अनुलग्नक में दी गई है ।

9. कार्य बल के वित्तीय प्रावधान इस प्रकार विनियमित किए जाएंगे :

(i) कार्य बल द्वारा किए जाने वाले अपेक्षित सभी पूंजी एवं राजस्व खर्चों का वहन केन्द्र सरकार करेगी जिसे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को दी जाने वाली अनुदान सहायता से पूरा किया जायेगा ।

(ii) राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण कार्य बल के व्यय का अपने स्थापना व्यय के रूप में लेखा जोखा तैयार करेगा और आवश्यकता पड़ने पर इस प्रकार की अन्य सचिवालयी अनुसचिवीय सहायता प्रदान करेगा । महालेखा नियंत्रक और भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक ऐसे व्यय की ठीक उसी रूप में लेखा परीक्षा करेंगे जिस प्रकार से राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के अन्य सामान्य खर्चे करते हैं ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की प्रति संबंधित राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्रों, राष्ट्रपति के निजी एवं सेना सचिवों, प्रधानमंत्री सचिवालय, भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, योजना आयोग, केन्द्र सरकार के सभी संबंधित मंत्रालयों/विभागों तथा कार्यबल के पूर्णकालिक सदस्यों को भेज दी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए और यह कि राज्य सरकारों को आम सूचना हेतु राज्य के राजपत्रों में इसे प्रकाशित करने का अनुरोध किया जाए ।

(विजय कुमार)
उप सचिव,

अनुलग्नक

महत्वपूर्ण तिथियाँ/नदियों को परस्पर जोड़ने के लिए निर्धारित समय

(i)	कार्य बल को अधिसूचित करना	16.12.2002 तक
(ii)	व्यवहार्यता अध्ययनों, विस्तृत परियोजना रिपोर्टों को पूरा करने के लिए समय सीमा, अनुमानित लागत, कार्यान्वयन कार्यक्रम, प्राप्त होने वाले लाभों और परियोजना के लाभों, इत्यादि की रूपरेखा देते हुए कार्रवाई योजना-I को तैयार करना ।	30.4.2003
(iii)	परियोजना वित्तपोषण और निष्पादन के लिए विकल्प तथा लागत वसूली के लिए सुझाई गई विधियाँ बताते हुए कार्रवाई योजना-II को तैयार करना ।	31.07.2003
(iv)	इस परियोजना पर विचार-विमर्श करने और उनके द्वारा दिए जा सकने वाले सहयोग का पता लगाने के लिए मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक	मई/जून 2003
(v)	व्यवहार्यता अध्ययन पूरे करना (कार्य चल रहा है)	31.12.2005
(vi)	विस्तृत परियोजना रिपोर्टों को पूरा करना (विस्तृत परियोजना रिपोर्टों को तैयार करना भी साथ ही साथ शुरू कर दिया जाएगा क्योंकि छः नदी संपर्कों के संबंध में व्यवहार्यता अध्ययन पूरे हो चुके हैं)	31.12.2006
(vii)	परियोजना का कार्यान्वयन 10 वर्ष	31.12.2016

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August, 2002

No. 213 -pres/2002 - The President is pleased to approve the award of the **"Ashoka Chakra"** to the undermentioned person for the acts of most conspicuous gallantry :-

JC-498232 SUBEDAR SURINDER SINGH 3 SIKH (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 03 March 2002)

While commanding a platoon deployed on the Line of Control in Rajouri Sector (Jammu and Kashmir) Subedar Surinder Singh continuously displayed valour and leadership during operations.

Based on information regarding the presence of terrorists, ambushes were laid. On 03 March, 2002 at 2350 hours when a group of terrorists was observed in the area, Subedar Surinder Singh ensured that own ambush party did not open fire prematurely and waited for the terrorists to close in. In a quick and decisive engagement, he shot the first terrorist from an extremely close range, exhibiting tremendous presence of mind and raw courage. In the meantime the remaining terrorists dispersed in the jungle. Subedar Surinder Singh immediately organized a search of the terrorists. During the search, he came under effective fire from behind a boulder. Heavy fire ensued. With utter disregard to his personal safety and under heavy exchange of fire as he crawled forward, a terrorist pounced upon him. In the ensuing hand-to-hand fight Sub Surinder Singh shot him dead.

In the meanwhile, four terrorists had sneaked into a house in village Tarala and were firing heavily. Own fire was proving ineffective. Realising the gravity of the situation, Subedar Surinder Singh volunteered to create an opening in the house. Despite effective fire, and at an immense risk to his life, he climbed on the roof, placed and detonated explosives and created an opening. Subedar Surinder Singh then hurled a grenade inside the house and fired. While he was moving away, a grenade was hurled towards own party by the terrorists. Realising the danger to his fellow

comrades, he took the entire blast on himself and consequently sustained multiple splinter injuries all over the body. Despite grievous injuries, Subedar Surinder Singh continued to engage the terrorists and killed two more terrorists. However, he succumbed to his injuries while being evacuated.

Subedar Surinder Singh, thus, displayed most conspicuous bravery, raw courage, concern for fellow comrades and made the supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 214 -pres/2002 - The President is pleased to approve the award of the **"Kirti Chakra"** to the undermentioned personnel for the acts of conspicuous gallantry :-

1. **JC-412535 NAIB SUBEDAR ISHWAR SINGH**
5 PARA

(Effective Date of the award: 11 Nov 2001)

Naib Subedar Ishwar Singh was the Road Opening Party Commander. On 11 Nov 2001 while opening the road, he received information about move of a group of foreign terrorists near Mangnar Forest, a thickly wooded forest in Poonch, J&K at an altitude of about 1450 meters, with visibility restricted to two to three meters.

Naib Subedar Ishwar Singh informed the Company Commander, readjusted pickets and swiftly moved towards the forest with a team, continuously tracking the group. The party suddenly came under heavy automatic fire. Calm and composed, Naib Subedar Ishwar Singh deployed his men and immediately returned fire, killing two terrorists. Undeterred by limited visibility and thick foliage, he outflanked and cutoff the escape route. Realising the company commander was severely injured, he assumed control of the situation and exhorted his men to provide supporting fire. He himself directed fire of Rocket Launcher resulting in killing of three terrorists.

With complete disregard to own safety Naib Subedar Ishwar Singh then charged and personally eliminated two terrorists. He, with his buddy, pursued the remaining terrorist and single handedly eliminated him in hand-to-hand combat.

Naib Subedar Ishwar Singh displayed most conspicuous valour, aggressive spirit and professional acumen while facing the terrorists.

2. **JC-612305 NAIB SUBEDAR DEV BAHADUR THAPA**
1/4 GORKHA RIFLES (POSTHUMOUS).

(Effective Date of the award: 19 Nov 2001)

On 19 Nov 2001 Naib Subedar Dev Bahadur Thapa was the commander of a search party during a Search and Destroy operation, launched to eliminate terrorists suspected to be hiding in Meganwar – Sadganga Forest in J&K.

A fierce encounter ensued as the search party contacted a group of heavily armed terrorists in a well concealed hideout, located on a dominating bushy knoll, making own troops vulnerable. He quickly deployed his support group, cut off escape routes and closed in with the terrorists against intense hostile fire, receiving a wound in the jaw. Unmindful of the wound, he continued to fire and eliminated two terrorists. He then further closed in with another terrorist, lobbed a grenade and killed the terrorist, receiving another fatal gun shot wound. This gallant action motivated his men to eliminate two more terrorists and recover a huge quantity of warlike stores.

Naib Subedar Dev Bahadur Thapa displayed exceptional leadership and conspicuous gallantry beyond the call of duty and saved casualties to his men, while himself made the supreme sacrifice.

3. **IC-47093 MAJOR USHNISHA JAITLY**
3/11 GORKHA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award : 01 Dec 2001)

On 01 December 2001, while conducting search and destroy operation in village Keri, in Poonch, J&K at about 0900 hours Major Ushnisha Jaitly noticed two terrorists who had pinned down his other column with effective and heavy fire.

Realising vulnerability of own troops in open and disadvantageous position, Major Ushnisha Jaitly decided to outflank the terrorists from a different direction, knowing fully well that this would expose him to terrorist fire at an extremely close range. Exhorting his men to continue engaging terrorists, he alone crawled up towards the terrorists. Breaking cover at close quarters, he charged at the terrorists, killing one on the spot. However in the process, he too received a burst of bullets on his face and chest. The Other terrorist ran down hill. Refusing to be evacuated despite grievous injuries and bleeding profusely, Major Ushnisha Jaitly closed in and in a close hand-to-hand combat, killed the other terrorist too before laying down his own life.

By his brave and courageous action Major Ushnisha Jaitly not only killed two terrorists but also saved lives of own troops.

Major Ushnisha Jaitly displayed conspicuous bravery and outstanding leadership in the face of terrorists and made the supreme sacrifice.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No. 215 -pres/2002 – The President is pleased to approve the award of the "**Shaurya Chakra**" to the undermentioned personnel for the acts of gallantry :-

1. **SHRI RAVINDRA KUMAR SHRIWAS, MADHYA PRADESH (POSTHUMOUS)**

(Effective Date of the award: 23rd June, 2000)

On 23.6.2000, at 8.55 p.m., a group of 7/8 persons armed with stones and axes, etc. attacked the Green Auto Mobile Service petrol pump at Maharana Pratap Nagar. The miscreants stoned the petrol pump and tried to loot the Cash. Shri Ravindra Kumar Shriwas, aged about 32 years, resident of Shankar Nagar Barkheri Govindpura, Bhopal, who was present at the petrol pump to buy petrol, showed extraordinary courage and tried to stop the miscreants from entering the cabin of Petrol pump. A miscreant hit at the head of Shri Ravindra Kumar Shriwas with an axe, as a result of which he sustained a grievous injury. However, without caring for his injury, Shri Shriwas continued to resist the miscreant's attempt to loot the petrol pump and they had to ultimately flee the spot. However, Shri Shriwas succumbed to the fatal injury on his head.

Shri Ravindra Kumar Shriwas exhibited courage and bravery and gave a tough fight to the miscreants bare-handedly and in the process lost his own life, thus, setting an example for others to emulate.

2. **SHRI BACHITTAR SINGH, J&K**

(Effective Date of the award: 9th Sept., 2000)

On 9th September, 2000, at about 0600 hours, an armed foreign mercenary entered the house of Ex Sepoy Bachittar Singh and demanded food and shelter at gun point. On learning about the presence of a militant in his house through one of the lady members of the house, Shri Singh descreetly sneaked out of his house with his .303 rifle. Apprehending that the militant would attempt a quick getaway, he sent a person to inform an Army patrol, camping nearby and laid an ambush on the expected escape route.

Before the army assistance could arrive, the militant tried to move away. Realising that the militant would escape, Shri Singh displayed unflinching courage and with utter disregard to his personal safety took tactical cover and shot at the escaping militant, seriously injuring him in his thigh. Undeterred by the retaliatory firing by the militant, Shri Bachittar Singh crawled closer to the militant and kept the injured militant under effective domination till the Army assistance arrived.

Shri Bachittar Singh showed exemplary act of valour and audacious fighting spirit which was instrumental in the killing of an armed terrorist and led to the recovery of weapons, ammunition and explosives.

3. **GS-165012X OPERATOR EXCAVATING MACHINERY ASHWANI KUMAR**

(Effective Date of the award: 18 May 2001)

Operator Excavating Machinery Ashwani Kumar of 116 RCC (GREF) was deployed as a Dozer Operator at Detachment Metengliang for formation cutting of road Hayuling-Metengliang-Changlohagam (China Study Group)Road which is the most top priority road. In the month of May 2001 a Nallah was encountered on alignment of the road at KM 19,100, thus halting the work. It was not possible to construct any temporary bridge immediately, as this detachment is still not connected by road.

After discussion with supervisory staff a survey was done to by-pass the dozer and the Air Compressor through the valley which was almost 150 meter deep and steep faces. Not many operators would dare taking the dozer through such valley. But Operator Excavating Machinery ASHWANI KUMAR voluntarily accepted the daring task and started the work on it on 18th May 2001. It was a herculean task, which was full of danger at every stage-needing a brave heart and very high standard of workmanship.

Finally ASHWANI KUMAR took his Dozer down to the bed of the Nallah in a 150 Meter deep valley which has got almost vertical faces. On the other side of the Nallah while climbing up, he encountered a hill face, which had hardly a place for a dozer to work. Also, continuous slide was coming-threatening to hit the dozer and the operator. In such demanding circumstances, Ashwani Kumar did not let his moral go down and continued with the stupendous task.

Finally, he over come all the odds in his way and completed the unimaginable task within a short period of two weeks thus making way for continuation of formation cutting work.

Operator Excavating Machinery Ashwani Kumar displayed high level of courage, presence of mind and dogged determination in extreme circumstances.

4. **2995915 SEPOY DHARMENDRA SINGH TOMAR RAJPUT/10 RR**

(Effective Date of the award: 10 July 2001)

An operation was launched in Gotul area of Doda District by a covert team on 10 July 2001 at 2000 hours. On 11 July 2001 at about 1830 hours a group of terrorists was spotted by the team in Gotul Forest. Sepoy Dharmendra Singh Tomar pinned down the terrorists by effective fire while the team encircled the terrorists. Heavy exchange of fire ensued under the cover of which, the terrorists tried to escape through a Nala.

Anticipating this, Sepoy Dharmendra Singh Tomar, showing exemplary courage ran towards the Nala with an other rank while bringing down effective fire on the terrorists. On being trapped, the terrorists launched two grenades towards him to create an opening for escape. Undeterred Sepoy Dharmendra Singh Tomar charged at the terrorists and killed two of them on the spot from a point blank range.

Sepoy Dharmendra Singh Tomar displayed exemplary courage, determination and initiative in true spirit of soldiering in facing the dreaded terrorists.

5. **IC-58400 CAPTAIN TEJ KARAM SINGH SEKHON 15 RAJPUT**

(Effective Date of the award: 04 Aug 2001)

On 04 August 2001, Captain Tej Karam Singh Sekhon alongwith a party from his company laid an ambush in densely forested, inhospitable and National Democratic Front of Bodoland (NDFB) dominated area of Sluice Gate (Bogajuli), Nalbari in Assam.

Inspite of inclement weather, heavy rains and poor visibility, in the bold and daring encounter with the heavily armed terrorist group, he with utter disregard to personal safety led the operation from the front. Despite heavy volume of fire and grenades being lobbed at him by the terrorists Captain Tej Karam Singh Sekhon with remarkable swiftness and raw courage advanced towards the terrorists and shot dead one hardcore terrorist and recovered one AK-56 Rifle from him. This successful operation very ably led by the officer resulted in killing of another hardcore terrorist. In a sequel to the relentless offensive operation against terrorists who were in a desperate retaliatory mission, Captain Sekhon led another fierce encounter on

12 August 2001. He in an act of raw courage and exceptionally conspicuous gallantry of highest order, chased the terrorist through dense undergrowth. The fleeing terrorist indiscriminately fired and lobbed grenades at him. Unmoved by these odds with utter disregard to personal safety, he closed in with the terrorist and in a fierce face to face exchange of fire killed him.

These exceptionally courageous actions led by the officer resulted in the killing of total of five hard core terrorists and recovery of three AK-47/56 Rifles and huge quantity of ammunition, explosive and incriminating documents.

Captain Tej Karam Singh Sekhon exhibited exemplary act of bravery, unflinching courage, bold and inspiring leadership in fighting the terrorists.

6. **IC-51581 CAPTAIN RAJENDRA SINGH DHAMI ARTY/8 ASSAM RIFLES**

(Effective Date of the award: 07 Aug 2001)

Based on specific intelligence, Capt Rajendra Singh Dhami planned a quick cordon and search operation in area Awangjiri in Bishenpur District of Manipur on 07 Aug 2001.

Capt Rajendra Singh Dhami quickly organised a search and led the column to enter a hideout without caring for his personal safety. His daring and unexpected move unnerved the hardcore terrorists, who tried to escape but were captured by the vigilant stops. Quick search of the area and interrogation carried out by Captain Rajendra Singh Dhami yielded results in terms of arms, ammunition and Radio set and the vital hard intelligence about presence of two hardcore terrorists in the area Laithouching. Capt Rajendra Singh Dhami fully aware that the terrorists were atop a hill and were advantageously placed, led the column without caring for his personal safety. He tactically cordoned the target area and moved with his party towards the target. As Capt Rajendra Singh Dhami closed on to the target, which was a tin hut, the terrorists fired a volley of rounds hindering his move. At this stage he asked for his move to be covered and with his buddy crawled close to the hut. As he was closing in he was fired at close range when he jumped behind a stone and ran along with his buddy through the volley of bullets towards the rear of the hut and shot the two terrorists at point blank range. A large quantity of ammunition and incriminating documents were recovered.

Captain Rajendra Singh Dhami, thus, displayed raw courage and aggressive spirit with total disregard to personal safety while facing the terrorists.

7. **3986227 NAIK TIRATH LAL**
6 DOGRA (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 31 Aug 2001)

On 31 August 2001, at approx 1030 hours, a search party came under heavy volume of terrorists' fire in Nowshera, Rajouri J&K.

Naik Tirath Lal, the leading scout was hit in the left thigh. The terrorists started to withdraw, with one terrorist providing covering fire. He though bleeding profusely, charged at the terrorist and shot him down. He then spotted two other terrorists trying to flee, using two civilians as human shields. He unmindful of his bleeding injury closed in with the terrorists. The daring soldier displaying exceptional marksmanship shot one terrorist through the head. The other terrorist on seeing this, threw his hostage aside and brought down heavy volume of fire on Naik Tirath Lal. This hit Naik Tirath Lal in the neck and pelvic region and he fell, but before he breathed his last he managed to lob a grenade at this terrorist and killed him.

Naik Tirath Lal exhibited gallantry, resolute determination, indomitable courage and made the supreme sacrifice.

8. **2481934 NAIK MUKHTIAR SINGH**
9 PARA(SF)

(Effective Date of the award: 02 Sep 2001)

Naik Mukhtiar Singh was squad Commander during the search and destroy mission in general area Sanjiwali in Poonch J&K on 02 Sep 2001.

Naik Mukhtiar Singh detected four terrorists moving on a track about one hundred meters below him. Deploying his squad to cut off likely escape routes of the terrorists he alongwith his buddy managed to close in with the terrorists. The terrorists opened indiscriminate fire on the troops and started escaping. With utter disregard to his own personal safety Nk Mukhtiar Singh chased the fleeing terrorists and shot dead two of them on the spot while one terrorist was seriously injured. He followed the blood trial left by the injured terrorist to a nala where the terrorist was hiding. He lobbed hand grenades and closed in and eliminated the third terrorist too.

Naik Mukhtiar Singh displayed conspicuous bravery, indomitable courage, aggressive spirit and exemplary leadership in fighting the terrorists.

9. **9418599 HAVILDAR GOKUL KUMAR PRADHAN**
3/11 GORKHA RIFLES

(Effective Date of the award: 04 Sep 2001)

Havildar Gokul Kumar Pradhan was a Sub Team Commander of Ghatak Platoon. On 04 September 2001, during cordon and search operation in Sarhoti Village in Poonch J&K a team was pinned down in thick maize fields by heavy volume of terrorists automatic fire.

To offset this disadvantageous position, extricate his team and eliminate terrorists, the Platoon Commander tasked Havildar Gokul Kumar Pradhan and his buddy to assault terrorists from a different direction. The two using tactical acumen cover closed onto the terrorists. Seeing themselves encircled, the terrorists directed hail of bullets onto the two. Taking initiative, Havildar Pradhan in an act displaying bold courage, charged towards terrorists firing from hip position. The terrorists were totally taken aback by this unprecedented action. In a hand to hand combat lasting over one hour both soldiers chased terrorists in thick maize fields and killed all four one by one, which also saved the lives of own troops.

Havildar Gokul Kumar Pradhan displayed raw courage and gallantry in fighting the terrorists.

10. **IC- 47725 MAJ BALRAJ SINGH SOHI**
5 JAK LI

(Effective Date of the award: 05 Sep 2001)

On 05 Sep 2001, at 1000 hours information was received that some terrorists were hiding in Lantibari, Barapetta in Assam. The Coy Cdr, Major Balraj Singh Sohi meticulously planned a daring operation. With his team he took most difficult, unexpected route and achieving complete surprise, cordoned a group of four houses by 1310 hours.

As Major Balraj Singh Sohi along with an other rank approached one of the houses, a volley of fire and grenades was drawn, injuring both. They returned fire unnerving the terrorists, one of whom attempted escape. Major Sohi showing quick reflexes shot him before he could either cause any damage or flee. Immediately another terrorist ferociously pounced on Major Sohi who showing nerves of steel absolutely unmindful of his grievous injuries grappled and shot him after a hand-to-hand fight. Major Sohi with absolute disregard to his personal safety, moved from man to man inspite of his injuries, refusing to get evacuated, controlled the manoeuvres of his troops, inspiring them by his actions. Consequently in a 50 minutes

encounter six dreaded terrorists were killed. One US Carbine, ammunition, five Chinese Grenades, communication equipment and a lot of incriminating documents and other material were recovered.

Major Balraj Singh Sohi displayed gallantry, and aggressive spirit with total disregard to personal safety while facing the terrorists.

11. **2480359 NAIK BABU SINGH**
PUNJAB/37 RR (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 10 Sep 2001)

Naik Babu Singh as part of the Company Commander's column during search in an operation at Thandasu in village Hasot in Udhampur, J&K on 10 Sep 2001.

At 0600 hours when cordon was closing in on three dhoks a group of civilians ran out of the house and started running away. When warned, the civilians stopped, but two shawl clad terrorists suddenly opened fire at troops and ran. Naik Babu Singh was hit on his chest and stomach with the initial burst itself. However, with utter disregard to his critical injuries he picked up the weapon of his buddy and ran after the terrorists and shot down both terrorists before succumbing to his injuries.

During the encounter Naik Babu Singh kept the safety of civilians in mind and ensured that fire was opened on terrorists only when they were clear of the civilians.

Naik Babu Singh, thus, exhibited cool courage, exceptional bravery and concern for safety of innocent civilians in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

12. **SS-37244 MAJOR JODHVIR SINGH**
1/4 GORKHA RIFLES

(Effective Date of the award: 12 Sep 2001)

Major Jodhvir Singh was the leader of a special mission patrol tasked to seek encounter and eliminate a group of foreign terrorists in the rugged, high altitude areas of Raja Ram Di Lari in Kupwara J&K.

After a continuous operation for four days, on 12th September, 2001, the patrol established contact with the heavily armed foreign terrorists, leading to a fierce encounter. The situation became critical, as the terrorists, firing from dominating positions, pinned down own troops, endangering their lives. Major Jodhvir Singh crawled behind the terrorists, closed in, under covering fire, surprising them completely and unmindful of his personal safety, eliminated two terrorists in a gallant

charge through the hostile fire. As the other terrorists started escaping, Major Jodhvir Singh led a vigorous pursuit, re-established contact and deployed his men to cut off escape routes. He then single handedly eliminated another terrorist in a close encounter. His personal example motivated his men to eliminate two more terrorists.

Major Jodhvir Singh displayed exceptional personal gallantry, junior leadership and saved the lives of his men, putting his own life at great risk while fighting the terrorists.

13. **IC-50189 MAJOR RAJESHWAR SINGH**
18 MADRAS

(Effective Date of the award: 12 Sep 2001)

Maj Rajeshwar Singh was company commander of a Forward Defended Locality in Tangdhar, Jammu and Kashmir.

Well organized ambushes spotted six terrorists attempting to infiltrate in bad weather on 12 Sep 2001. Maj Rajeshwar Singh exercised restraint allowing the terrorists to come into the designated killing area. Ambush was sprung with heavy fire killing one terrorist while other terrorists took refuge in a cave, retaliating with heavy RPG and PIKA fire on own troops. Maj Rajeshwar Singh though injured by a grenade splinter continued to lead the operation. Regrouping the ambush parties to fix the terrorists, he took a bold and calculated decision to clear the cave. Exhibiting cool courage and tact, he created a diversion and charged the cave alongwith an NCO, killing two terrorists. The daring act inspired the NCO to shoot another terrorist. Maj Rajeshwar Singh maintained the pressure pushing down the terrorists and in yet another swift and daring move mortally wounded a terrorist trying to seek cover. The operation was concluded next day by killing of the last surviving terrorist.

Maj Rajeshwar Singh, thus, displayed gallantry, indomitable fighting spirit, sound tactical acumen and cool courage in fighting the terrorists.

14. **SS-37700 CAPTAIN CHANDRA PAL SINGH KHATI**
4/4 GORKHA RIFLES

(Effective Date of the award: 18 Sep 2001)

On 15 September 2001 during a battalion level operation Ghatak platoon was moved at 0400 hours from Tupul to Khoupum Valley on a search and destroy mission of Under Grounds camps in the southern belt of Tamenglong district in Manipur.

The column moved out of Tupul and travelled for 15-18 kms every day for three consecutive nights. At 0300 hours on 18 September 2001 the column left for village Songphu and on interacting with the villagers acquired information of an Under Grounds camp and left for village Mamong at 0800 hours in search of the camp. Reaching short of the village Captain Chandra Pal Singh Khati informed the Ghatak Commander of the presence of 30-35 Under Grounds in the village. Observing them for few minutes Captain Chandra Pal Singh Khati, to achieve surprise, decided to gain height and moved through inhospitable terrain to secure an advantageous position. Having reached within striking distance of the Under Grounds the team leader divided his party into two for the final assault on the camp. Captain Khati with three other ranks formed a sub-team and was ordered to assault from the left. The sub team then stealthily approached the Under Grounds when the Under Grounds opened fire from all directions. At this moment seeing the presence of Under Grounds within killing range Captain Khati disregarding his own personal safety barged on to the terrorists' firing from his assault Rifle which resulted in killing of two Under Grounds and injuring several others.

The swift and meticulous action led to the killing of five hardcore Under Grounds and recovery of arms/ammunition and other equipment.

Captain Chandra Pal Singh Khati displayed raw courage and bravery in fighting the Under Grounds.

15. **3183763 NAIK RIT RAM**
7 JAT

(Effective Date of the award: 19 Sep 2001)

On 18 Sep 2001 Naik Rit Ram was in the cordon party sited in general area Goldh in J&K on receiving information about five terrorists having infiltrated at about 2130 hours.

Naik Rit Ram's stop was positioned to the west of the house in which the terrorists had taken shelter. On 19 September 2001 at about 0700 hours, realising that they were surrounded, the terrorists opened heavy fire. Although the troops fired at the terrorists, it proved ineffective and the tall maize crop provided them with all the chances of escape. Realising this Naik Rit Ram, inched towards the house even as the terrorists brought down heavy fire on him and climbed onto the roof of the house where he calmly, placed demolition charges to ensure that none of the terrorists could escape. He went about his task in the utmost professional manner even though one of

the terrorists lobbed a grenade and fired at him. He then tactically withdrew and set off the charges eliminating four dreaded foreign terrorists including a District Commander.

Naik Rit Ram displayed extraordinary courage and gallantry in fighting the terrorists.

16. **3186838 SEPOY MANJIT**
6 JAT (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 27 Sept 2001)

On 27 September 2001 information about the likely presence of terrorists in general area HATIGARH and KUMARIGAON in Assam was received from reliable sources. The Battalion swung into action by deploying search teams.

At 0500 hours, a section of a company while carrying out search operations in Hatigarh, came under effective and heavy volume of fire. In the exchange of fire two members received grievous wounds and Sepoy Manjit got a grazing gun shot wound. Taking advantage of the jungle and thick undergrowth the terrorists disengaged and started moving towards village Khuji. Sepoy Manjit, undeterred by his injury, took command of his section and kept on chasing the fleeing terrorists. He was successful in corning the terrorists in a house in village Khuji. The terrorists opened heavy volume of fire on the troops. Sepoy Manjit deployed his section and himself took position along with another rank and effectively covered escape route. Under the covering fire of his buddy, he crawled towards near the window and threw a hand grenade inside the house. This led to panic among the terrorists and two terrorists came out of the house firing incessantly, grievously injuring Sepoy Manjit. Despite being grievously injured and displaying raw courage, Sepoy Manjit killed one militant in a close quarter battle. He, however, breathed his last while being evacuated.

Sepoy Manjit displayed enviable courage, bravery, disregard for personal safety and made the supreme sacrifice in fighting the terrorists.

17. **SS-36999 MAJOR VIJIT KUMAR SINGH**
ARTY, 17 PARA FD REGT (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 04 Oct 2001)

While deployed in OP RHINO in South Assam, on 04 Oct 2001 Maj Vijit Kumar Singh led a seek and destroy mission in village Namdailong in Cacher, Assam where 10-12 armed terrorists were reportedly taking shelter.

Maj Vijit Kumar Singh knowing fully well the risk decided to be one of the leading scouts. At approx 0600 hrs on 04 Oct 2001 after a gruelling march the patrol reached the outskirts of the village. The entrance of the village was through a partially broken bamboo bridge which was negotiated carefully by the officer. As soon as the officer reached the far bank in an attempt to secure it, he was indiscriminately fired upon from the paddy fields 20-30 meters away from the bridge by a group of terrorists. He fired back and dashed towards the terrorists. The vehemence of the action forced the terrorists to flee through the paddy fields towards a nala. Exhibiting martial aggression Maj Vijit Kumar Singh alongwith his buddy started chasing the terrorists. Seeing them close in, the terrorists started firing on them to halt their advance. The officer undeterred opened aimed fire at them. As a result one of the terrorist took to the ground while the other two shed their weapons and pouches and stumbled into the nala.

Maj Vijit Kumar Singh realizing that the three terrorists had been hit, showing exemplary courage and dogged determination, dashed towards the nala. During this the terrorist who had fallen in the paddy field raised his weapon and started firing at his buddy. Maj Vijit Kumar Singh charged towards the terrorist during which one of the shot fired by the terrorist hit the officer causing fatal injury. Despite being grievously injured the officer in a dying effort fired at the terrorist and killed him. Maj Vijit Kumar Singh died on the spot but not before saving the lives of his buddy and his team.

In this action Maj Vijit Kumar Singh displayed an awesome aggressive spirit, camaraderie and courage beyond the call of duty and made the supreme sacrifice in fighting the terrorists.

18. **9420553 RIFLEMAN RAMESH PRASAD KHANAL**
3/11 GORKHA RIFLES

(Effective Date of the award: 06 Oct 2001)

Rifleman Ramesh Prasad Khanal was Number 1 scout of Charlie Company. On 06 October 2001, while the column was searching village Topa Thera in Poonch J&K they came under heavy fire from terrorists hiding in a house. The column was pinned down due to the heavy and accurate fire and could not make any progress.

Seeing gravity of situation Rifleman Ramesh Prasad Khanal volunteered alongwith an other rank to enter the room from where terrorists were firing. He crawled up to the window stealthily and entered room through window catching the terrorists unawares. Lobbing grenade he shot one of the terrorists near the window and turning towards the inner room totally exposing himself to terrorists fire, he shot

the second terrorist in a rare display of courage tenacity with nerves of steel and accurate marksmanship. The remaining terrorist retreated concurrently bringing down heavy volume of fire from the other room. However Rifleman Khanal kept the terrorist engaged thus enabling his buddy to shoot the last terrorist.

Rifleman Ramesh Prasad Khanal displayed presence of mind and conspicuous bravery of exceptionally high order.

19. **2985593 HAVILDAR CHANDAN MAL RAJPUT/23 RASHTRIYA RIFLES**

(Effective Date of the award: 15 Oct 2001)

On 15 Oct 2001 Havildar Chandan Mal was leading a column as a part of the Search and Destroy Operation in Thanamandi, Rajouri J&K.

On encounter with terrorist, Havildar Chandan Mal fired back and manoeuvred his party cornering the terrorist in a nala. The Company Commander moved additional parties to lay cordon and brought down coordinated fire. Meanwhile Havildar Chandan Mal alongwith his buddy closed in with the terrorist. Showing dogged determination raw courage and exemplary zeal, Havildar Chandan Mal with utter disregard to personal safety crawled through the undergrowth within five meters of the terrorist and shot him dead. When the second terrorist opened fire, Havildar Chandan Mal informed the Company Commander and readjusted his party to close in. Havildar Chandan Mal again closed in and shot the terrorist dead in close combat.

Havildar Chandan Mal displayed valour, dogged determination and raw courage in the face of terrorist fire.

20. **JC-538291 SUBEDAR SATYA PRAKASH KUMAON/26 RR (POSTHUMOUS)**

(Effective Date of the award: 18 Oct 2001)

On 18 Oct 2001 as commander of the reinforcement, in an operation in Gandoh, Doda J&K Subedar Satya Prakash and his party commenced search of KAKO NALA to flush out and eliminate the terrorists who has escaped from the village.

At 1445 hours a barrage of automatic fire was aimed at the search party by the terrorists. Subedar Satya Prakash was hit on the forehead. Despite wound, he crawled up to an effective firing position and deployed his party. Mustering up all his determination, courage and energy, he threw grenades and charged at the terrorists firing his AK 47. He shot dead two dreaded terrorists at close quarters in this daring

move. The gallant Junior Commissioned officer thereafter succumbed to his injury and attained martyrdom.

Subedar Satya Prakash displayed exemplary battlefield leadership, ensuring safety of his command, personal valour and bravery and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

21. **JC-634214 SUBEDAR GYAN BAHADUR LIMBU**
3/11 GORKHA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 22 Oct 2001)

Subedar Gyan Bahadur Limbu was column commander in village Nakka, Poonch, J&K.

On 22 October 2001, while conducting Search and Destroy Operation at about 0930 hour the column was pinned down by heavy fire of terrorists hidden in Nala replete with dense foliage and big boulders. Seeing grave danger to troops being in open and disadvantageous position, Subedar Limbu decided to out manoeuvre terrorists. Exhorting his column to take cover and directing them to continue firing, he alone outflanked hidden terrorists and breaking cover at close quarters charged at first terrorist eliminating him with his rifle. He however received a hail of bullets on his torso and his Rifle fell down. Other terrorist brought down effective fire on the column. Refusing to be evacuated from the site despite grievous injuries and bleeding profusely, in absence of his personal weapon in a rare act of dare devilry, Subedar Limbu with a grenade in hand charged and killed the other terrorist too. However, in the process he attained martyrdom.

Subedar Gyan Bahadur Limbu, thus, displayed conspicuous bravery and outstanding combat leadership in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

22. **822324 NON COMBATANT (ENROLLED) PRAKASH SHIVAJI GANGAVANE**
LASCAR (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 22 Oct 2001)

On 22 Oct 2001, at 1330 hrs, four Pakistani terrorists belonging to Laskar-e-Toiba, who were armed, attacked the main gate of Air Force Station Awantipora. Their aim was to gain access inside the Air Force Station and create havoc by destroying Aircraft, Missile Complexes and to create panic amongst personnel and their families. The terrorists were armed with AK-47 assault rifles and high explosive hand grenades.

NC(E) Prakash SG was on duty at the main gate. On sighting the intruders, he challenged them of their identity and refused to open the gate. On further jostling by the terrorists, he raised an alarm to alert the sentries on duty realizing the impending danger to his life. He was shot at from point blank range, but he continued to obstruct the intruders from gaining access into the Main Guard Room and succumbed to the terrorists' bullets. NC (E) Prakash attained martyrdom and laid down his life to facilitate the security forces to take vantage position to vanquish the terrorists. He displayed exceptional courage and acted in the best tradition of the Air Warriors of the Indian Air Force.

NC (E) Prakash Shivaji Gangavane displayed conspicuous valour, raw courage, presence of mind and sacrificed his life while eliminating the terrorists.

23. **10228076 SEPOY SATISH BARDE GD, DSC**

(Effective Date of the award: 22 Oct 2001)

On 22 Oct 2001, at 1330 hrs, four Pakistani terrorists belonging to Laskar-e-Toiba, who were armed, attacked the main gate of Air Force Station Awantipora. Their aim was to gain access inside the Air Force Station and create havoc by destroying Aircraft, Missile Complexes and to create panic amongst personnel and their families. The terrorists were armed with AK-47 assault rifles and high explosive hand grenades.

Sep Satish Barde was on duty at the SLR DSC post at the time of attack. Through his keen sense of alertness, he reacted to the situation immediately and alerted the other two guards of his post. He instantly opened fire from his SLR towards the vehicle from where the terrorists initially opened fire. He restricted the advancement of the terrorists towards the main gate by seriously injuring two of them through his concentrated firepower. He positioned himself strategically in his post amidst heavy fire and inflicted casualty on the terrorists. Unmindful of the risk to his own life, he relentlessly continued to direct the firepower and guide the people in action on to the terrorists till all of them were killed. Had the terrorists gained access inside the station it would have been catastrophic for the Air Base.

Sep Satish Barde displayed conspicuous valour, raw courage and presence of mind while eliminating the terrorists.

24. **T/No. 998 MAZDOOR RAVI BAHADUR**
BORDER ROADS ORGANISATION (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 24 Oct. 2001)

Shri Ravi Bahadur was recruited as Mazdoor on 21.9.1999 against token no. 998. On 24 Oct 2001, at 147.600 on Balipara-Chardaur-Tawang Road, the rock debris was being cleared by a Dozer BD-80 EM No. 99G-28257 after blasting work. Shri Ravi Bahadur was deployed with the above Dozer for giving advance warning to the personnel regarding any possible danger. At around 1545 hrs on that fateful day while the said Dozer was pushing the rocky debris, all of a sudden, a big mass of the rock got separated from protruding rocky feature above the road and started falling down. Shri Ravi Bahadur very precisely sensed the movement of the rock and immediately warned other seven Mazdoors and the Dozer operator who were working there to run away and they all escaped miraculously. Unfortunately while doing so, he himself got trapped under the rock debris and was crushed to death instantaneously.

Shri Ravi Bahadur unmindful of his own life, acted with due caution and alertness, displayed extreme degree of courage and made the supreme sacrifice in saving the lives of his colleagues. This has certainly set a example and will ever remain a source of inspiration for others.

25. **2683896 LANCE NAIK KHADAM HUSSAIN**
15 JAK RIFLES

(Effective Date of the award: 31 Oct 2001)

On 31 Oct 2001 at 1530 hours search party in Bandi ka Makan Forest in Poonch J&K under Lance Naik Khadam Hussain was fired upon.

Rocky steep escarpments and dense undergrowth restricted movement, field of fire, visibility and neutralised effect of own fire. This necessitated a thorough search, location and closing in with the terrorists to kill them. Volunteering to lead the search, Lance Naik Khadam Hussain moved from bush to bush with fire support from his buddy. Searching one bush, he suddenly confronted two terrorists face to face who opened fire at him. In a swift action with total disregard to personal safety, Lance Naik Khadam Hussain jumped aside, hit the terrorist with his Rifle butt and retaliated violently thereby killing one terrorist instantly and injuring the second. Firing at him, the injured terrorist rolled down hill and attempted escape. Exhibiting extraordinary initiative, Lance Naik Khadam Hussain chased the fleeing terrorist, single handedly apprehended and extracted vital information before the terrorist died. Two AK Rifles and two radio sets were recovered.

Lance Naik Khadam Hussain exhibited conspicuous gallantry, extra-ordinary initiative and raw courage in fighting the terrorists.

26. **2479576 HAVILDAR DALWINDER SINGH**
17 PUNJAB

(Effective Date of the award: 09 Nov 2001)

Havildar Dalwinder Singh was performing the duties of driver in the Commanding Officer's Quick Reaction Team. Based on specific information regarding presence of three terrorists in a house in village Kogund in Anantnag, Jammu and Kashmir an operation was launched on 09 November 2001 at 1730 hours.

The suspected group of houses was cordoned off by 1800 hours and firefight commenced at 1845 hours. Commanding Officer's quick reaction team arrived at the site of encounter at 1900 hours. At about 2200 hours, Havildar Dalwinder Singh, crawled next to the exit door of the house from where terrorists were firing. At 2230 hours, two terrorists ran out firing their weapons trying to break the cordon. Havildar Dalwinder Singh, charged at the running terrorists, undeterred by heavy volume of fire being brought down by them and shot dead both the terrorists from a very close range. A large cache of arms, ammunition and incriminating documents were recovered from the terrorists.

Havildar Dalwinder Singh displayed exemplary presence of mind, valour and indomitable courage under sustained terrorist fire.

27. **SS-37277 CAPTAIN SANJIV SIROHI**
ARTY/23 RR

(Effective Date of the award: 17 Nov 2001)

On 17 November 2001 four columns under Captain Sanjiv Sirohi were tasked to lay stops and to search areas in Thanamandi, Rajouri, J&K.

At about 1500 hours the columns under Captain Sanjiv Sirohi came under heavy fire from a Nalla. He cordoned the immediate area of the Nalla to prevent the terrorists from fleeing and brought down heavy fire of Rocket Launcher and automatics in the Nalla and also used grenades. Due to failing light, he finally led a small party and crawled forward and lobbed grenades into the Nalla. Subsequently, under the covering fire of his party, Captain Sirohi under terrorist fire and using the cover of boulders advanced close to the terrorists and killed three terrorists individually in close combat.

Captain Sanjiv Sirohi displayed impeccable personal leadership and gallantry in the face of terrorist fire killing three hard core terrorists, without any loss/injury to own troops.

28. **IC-59069 LIEUTENANT MANAV YADAV**
1 PARA (SF)

(Effective Date of the award: 18 Nov 2001)

On receipt of information about presence of terrorists in Village Hari in Poonch J&K, an operation was launched on the night of 18/19 November 2001.

While one column secured heights, Lieutenant Manav Yadav with his column approached the target through the Paniali Nalla achieving total surprise. At 0645 hours he observed one suspected terrorist outside a Dhok. To confirm that the individual was a terrorist, Lieutenant Manav Yadav under disguise closed onto him and before the terrorist could draw his weapon shot him. Immediately, three terrorists rushed out, firing indiscriminately at Lieutenant Yadav, into Paniali Nalla. Showing sound judgement and exploiting initiative the officer pursued the terrorists. Maintaining the tempo, without losing time, he shot two more terrorists, while the third entered a cave. Showing dogged determination, audacity and raw courage he charged into the cave and killed the fourth terrorist. The action also led to recovery of arms and ammunition.

Lieutenant Manav Yadav displayed exemplary courage, dogged determination, and leadership beyond the call of duty under adverse conditions with total disregard to personal safety.

29. **IC-53629 MAJOR SUNIT SINGH**
MAHAR/1 RR

(Effective Date of the award: 30 Dec 2001)

On 30 Dec 2001 based on actionable intelligence, Major Sunit Singh, led his column to cordon village Durapura, in Pulwama, Jammu and Kashmir. The terrorists holed up in the village opened heavy volume of fire, thereby making identification of target houses difficult.

Identifying a void, as Major Sunit Singh approached a lane, heavy volume of terrorists fire came from one house. Undeterred by this, asking the party to cordon the house, Maj Singh with his buddy displaying unprecedented valour crawled undetected under effective fire close to the house. In a daring action and with absolute disregard to personal safety, he lobbed two grenades simultaneously inside the house which

killed two terrorists. One terrorist lobbed a grenade, which injured Major Sunit Singh severely. Despite his injury and bleeding profusely, Major Sunit Singh directed his party to bring effective fire on the house. One terrorist in an attempt to jump, came up to the window. Major Sunit Singh charged on him and displaying quick reflexes shot him down.

Major Sunit Singh displayed conspicuous personal valour and bravery, exemplary junior leadership and effective command and control in adverse situation.

30. **4569688 SEPOY RAJBIR**
MAHAR/1 RR (POSTHUMOUS)

(Effective Date of the award: 30 Dec 2001)

During a search operation in village Durapura in Pulwama in Jammu and Kashmir on 30 December 2001, Sepoy Rajbir was the buddy of an officer. While cordoning the village, terrorists opened a heavy volume of fire on the cordon party.

Undeterred with this, Sepoy Rajbir with his buddy narrowed on to a house held by 6-7 terrorists. Limited cover facilitated terrorists to bring effective fire. He alongwith his buddy under terrorist fire crawled undetected under the windows of the target house. In a gallant action Sepoy Rajbir lobbed two grenades inside the house, killing one terrorist. In this action, he however sustained splinter injuries by terrorist UBGL fire. Despite bleeding profusely, he refused to leave his position. Two terrorists in a bid to escape, jumped out of the window firing indiscriminately. Though sinking, unmindful of his personal safety, Sepoy Rajbir fired with his personal weapon and shot them down. This gallant Soldier succumbed to his injuries eventually.

Sepoy Rajbir displayed unparallel bravery, resolute determination in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice.

31. **IC-42448 MAJOR TANVIR AHMED SIDDIQUI**
7 JAT

(Effective Date of the award : 07 Jan 2002)

Major Tanvir Ahmed Siddiqui, received information about a group of seven terrorists in village Goldh in J&K and placed a cordon on 07 January 2002.

Contact was established in pitch darkness at 0010 hours and firing continued throughout the night. Three terrorists attempting escape, took positions amongst boulders in the nala and brought down heavy fire on own troops. Realising grave danger to the troops and finding own fire ineffective, Major Tanvir Ahmed Siddiqui at

1030 hours moved forward but was fired upon heavily by terrorists holed up in the nala. Undeterred, the officer, crawling amidst a hail of bullets, surprised two of the terrorists and eliminated them in close combat. Upon this the third terrorist charged onto him firing heavily and throwing grenades but was calmly killed by Major Siddiqui. Thereafter, he alongwith an other rank closed onto two other terrorists. Major Siddiqui crawled towards one terrorist and in a fierce hand-to-hand fight killed him. This act inspired the other rank to eliminate the remaining three terrorists.

Major Tanvir Ahmed Siddiqui displayed gallantry, resolute determination and exceptional professional acumen while facing the terrorists.

32. **3192315 SEPOY SUNIL KUMAR**
7 JAT

(Effective Date of the award: 07 Jan 2002)

Sep Sunil Kumar was part of the Quick Reaction Team when contact was established with terrorists at 0010 hours on 07 January 2002 in village Goldh in J&K after which intermittent exchange of fire continued throughout the night.

At about 1045 hours under covering fire given by Sep Sunil Kumar, an officer closed onto three terrorists holed up in a nala and eliminated them. Balance four terrorists of the group split into two groups. Sep Sunil Kumar along with the officer closed onto two of the terrorists, exposing themselves in the open, whereupon he crawled forward, lobbed a grenade and killed one of the terrorists while the second was eliminated by the officer.

The balance two terrorists meanwhile had taken shelter amidst dense undergrowth and opened fire upon the party. Sep Sunil Kumar realizing the danger continued to advance forward, closed onto the remaining two terrorists and despite being outnumbered, shot them dead at a range of 6-8 yards.

Sep Sunil Kumar displayed exceptional gallantry, camaraderie and presence of mind in extreme circumstances.

33. **IC-51945 MAJOR RAJIV KUMAR DAHIYA**
SIKH/16 RR

(Effective Date of the award: 22 Jan 2002)

On 22 January 2002, search party led by Major Rajiv Kumar Dahiya in Solian, Poonch J&K came under heavy terrorist fire.

While trying to close in towards the terrorists, a cave was spotted 100 meters away where the terrorists had taken cover. In a split second decision, Major Rajiv Kumar Dahiya sited his support group and started to crawl alone towards the cave. Knowing fully that four terrorists were still alive, he lobbed grenades before storming the cave and sprayed a volley of bullets, thus killing two terrorists at point blank range. Meanwhile, two of the terrorists shocked by the daredevil act, ran outside into a nala. Displaying extraordinary presence of mind, Major Dahiya lobbed a grenade towards the terrorists so as to divert their attention and charged towards the terrorists and killed the other two terrorists also, thereby single handedly eliminating four hardcore terrorists.

Major Rajiv Kumar Dahiya, thus, displayed conspicuous personal bravery and leadership of highest order.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

Ministry of Statistics &
Programme Implementation

New Delhi, dated 15th November, 2002

In continuation of this Department's Notification No. M-13011/1/96-Admn. IV dated 17th April, 2002 the tenure of the Governing Council, National Sample Survey Organisation is extended by another 6(Six) months, i.e. upto 31.3. 2003.

2. The members of the Council, both official and non-official will be the same and there will be no change in the terms of reference of the Council.

(B.R. Sharma)
Under Secretary

NO. 2/21/2002-BM/1094
MINISTRY OF WATER RESOURCES

New Delhi, the 13th December, 2002

RESOLUTION

The Ministry of Water Resources (then known as Ministry of Irrigation) in the year 1980 formulated a National Perspective Plan for water resources development by transferring water from water surplus basins to water deficit basins/regions by inter-linking of rivers. The National Perspective Plan has two main components i.e. the Himalayan Rivers Development and Peninsular Rivers Development. The National Water Development Agency (NWDA) was set up as a Society under the Societies Registration Act, 1860 in 1982 to carry out the detailed studies and detailed surveys and investigations and to prepare feasibility reports of the links under the National Perspective Plan.

2. NWDA has, after carrying out detailed studies, identified 30 links for preparation of feasibility reports and has prepared feasibility reports of 6 such links. The various basin States have expressed divergent views about the studies and feasibility reports prepared by NWDA. With a view to bringing about a consensus among the States and provide guidance on norms of appraisal of individual projects and modalities for project funding etc. the Central Government hereby sets up a Task Force.

3. The Task Force shall be as under:

(i) Shri Suresh Prabhu, Member of Parliament, Lok Sabha, Chairman
(ii) Shri C.C. Patel, Vice-Chairman; and
(iii) Dr.C.D. Thatte, Member-Secretary.

4. In addition to the above members of the Task Force, part-time members will also be nominated in consultation with the Chairman of the Task Force and with the approval of the Prime Minister. These part-time members will be as under:

(i) a member from water deficit States
(ii) a person from water surplus States
(iii) an economist
(iv) a sociologist; and
(v) a legal/world wildlife expert.

5. The terms of reference of the Task Force will be to:

i) Provide guidance on norms of appraisal of individual projects in respect of economic viability, socio-economic impacts, environmental impacts and preparation of resettlement plans;
ii) Devise suitable mechanism for bringing about speedy consensus amongst the States;
iii) Prioritize the different project components for preparation of Detailed Project Reports and implementation;
iv) Propose suitable organizational structure for implementing the project;
v) Consider various modalities for project funding; and
vi) Consider international dimensions that may be involved in some project components.

6. The Task Force shall have its headquarters in New Delhi and shall meet as and when necessary.

7. The terms and conditions for Chairman, Vice-Chairman, Member-Secretary and other Members shall be decided in due course.

8. The milestone/time table for achieving the goal of inter-linking of rivers by the end of 2016 is as given at Annexure.

9. The financial provisions of the Task Force will be regulated as under:

i) All the capital and revenue expenditure required to be incurred by the Task Force shall be borne by the Central Government through the grants-in-aid to National Water Development Agency; and

ii) National Water Development Agency will account for expenditure of the Task Force as a part of its establishment expenditure and would provide such other secretarial/ministerial assistance as may be required. Audit of Controller General of Accounts and Comptroller and Auditor General of India would be incident on such expenditure in the same manner as it would be on National Water Development Agency's other usual expenditure.

ORDER

Ordered that a copy of the resolution be communicated to the concerned State Governments and Union Territories, the Private and Military Secretaries to the President, Prime Minister's Secretariat, the Comptroller and Auditor General of India, the Planning Commission, all concerned Ministries/Departments of Central Government and full time members of Task Force.

Ordered also that the Resolution be published in the Gazette of India and that the State Governments be requested to publish it in the State Gazettes for general information.

(VIJAY KUMAR)
Deputy Secretary.

Annexure

Milestone dates/Time Table for interlinking of Rivers

(i)	Notification of the Task Force	By 16.12.2002
(ii)	Preparation of Action Plan-I, giving an outline of the time schedules for the completion of the feasibility studies, detailed project reports, estimated cost, implementation schedule, concrete benefits and advantages of the project, etc.	30.04.2003
(iii)	Preparation of Action Plan-II, giving alternative options for funding and execution of the project as also the suggested methods for cost recovery.	31.07.2003
(iv)	Meeting with the Chief Ministers to deliberate over the project and to elicit their cooperation.	May/June, 2003
(v)	Completion of Feasibility Studies (already in progress).	31.12.2005
(vi)	Completion of Detailed Project Reports. (Preparation of DPRs will start simultaneously since FSs in respect of six river links have already been completed).	31.12.2006
(vii)	Implementation of the Project (10 years).	31.12.2016

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2003
PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD, AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2003